न्यूज़ बकेट

मोदी की अग्निपरीक्षा

HOTEL UTSAV RESIDENCY

FACILITIES:

- Take the Charge & Control of or Centralized Air Conditioned Rooms.
- For good picture quality & clear visibility, enjoy our 32" LCD Television.
- 24 Hours Room Service.
- Doctor on Call.
- Laundry Services.
- Medical Centre.
- Free Wifi.

LOCATION:

BABA COMPLEX, BHU ROAD, LANKA, VARANASI

Email: hotelutsavresidency@gmail.com
Tel. 0542-2367080

BABA RESTAURANT

The Restaurant serves everything from traditional Indian, Chinese and Continental Cuisine dishes.

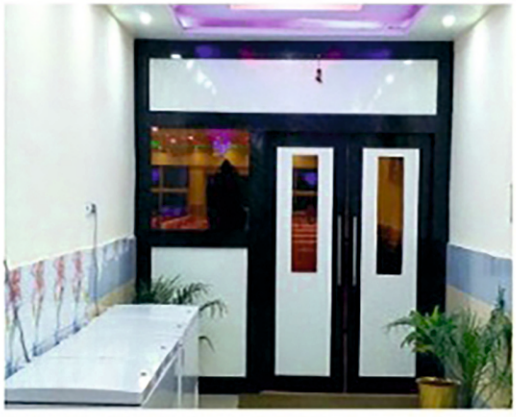

go mmt GROUP
make my trip | goibibo

भीतर

भारत-चीन विवाद के 7 सबसे अहम कारण

चीन और भारत के बीच के इस इलाके में घुसपैठ को लेकर पहले भी इस तरह के विवाद होते रहे हैं, क्योंकि हर देश सीमा को अपने-अपने नजरिये से देखता है पढ़े पूरी खबर, **पेज न. 06 पर...**

चीनी सरकार ने भले ही इस मामले पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी हो, लेकिन चीन की सरकारी मीडिया ने भारत के कदम को अमेरिका (US) की नक़ल करने वाला करार दिया है। पढ़े पूरी खबर, **पेज न. 07 पर...**

भारत ने 59 चाइनीज ऐप्स पर लगाया बैन, बौखलाया चीन

बॉलीवुड इंडस्ट्री के लिए 2020 काफी खराब साल

बॉलीवुड इंडस्ट्री के लिए तो साल 2020 काफी खराब साल साबित होता जा रहा। एक तरफ तो दुनिया कोरोना महामारी से लड़ रही तो वही एक तरफ बॉलीवुड की कई हतियों की एक के बाद एक मृत्यु होती जा रही पढ़े पूरी खबर, **पेज न. 23 पर...**

सम्पादकीय.....4
कवर स्टोरी.....5-8
राष्ट्रीय.....9-14
प्रदेश.....15-18
वाराणसी.....19-22
मनोरंजन.....23-26
शिक्षा जगत.....27-29
स्वास्थ्य.....30-32
खेल.....33-35
धार्मिक.....36-37
गृहणी.....38-39
खबर एक्सप्रेस.....40-45
पृष्टो का शेष.....46

न्यूज़बकेट

www.newsbucket.in

जुलाई 2020

वर्ष 1 अंक 6

संस्थापक संरक्षक
संरक्षक : मिथिलेश पटेल
प्रधान संपादक : राजू श्रीवास्तव
कंटेंट एडिटर : विकास कुमार श्रीवास्तव
फोटो एडिटर : सुधीर कुमार गुप्ता
छायाकार : महेंद्र पटेल

कानूनी सलाहकार
भूपेश पाठक : **अधिवक्ता**
रवि प्रकाश तिवारी : **अधिवक्ता**

प्रधान कार्यालय (FIVE ALPHABETS)
बी - 31/19, आर बाबा शॉपिंग
काम्प्लेक्स लंका, वाराणसी।
E-Mail : m@fivealphabets.com
मो0 : 9415147110, 8574479280, 9807505429

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक मिथिलेश पटेल एवं संपादक राजू श्रीवास्तव ने रॉयल प्रिंटिंग वर्क्स - C 25/2 राम कटोरा, चेतगंज, वाराणसी से मुद्रित कराकर बी - 31 /19, आर बाबा शॉपिंग काम्प्लेक्स लंका, वाराणसी से प्रकाशित किया।

पत्र संख्या - 1816/J.A.III-2019

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखक के हैं। उसमे संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। समस्त विवादों का क्षेत्र वाराणसी न्यायालय होगा।

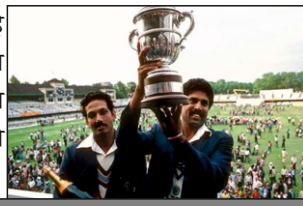

हम अपनी टीम के बारे में गर्व महसूस कर रहे थे। हमने टूर्नामेंट जीतकर खुद को गौरवान्वित किया। विश्व कप जीत एक अद्भुत चीज है। इस वजह से पूरे देश ने जश्न मनाया।" पढ़े पूरी खबर, **पेज न. 34 पर...**

जून 25, 1983 भारत ने पहली बार क्रिकेट विश्व कप जीता।

यह न केवल विरोधाभासी, बल्कि विचित्र सा है कि केंद्र सरकार जहां एक ओर कारोबारी गतिविधियों को फिर से चालू करने पर विचार कर रही है वहीं घर वापस लौट रहे मजदूरों के कारण सरकार की मंशा पर पतीला लग सकता है। अर्थव्यवस्था को पुनः सुचारू रूप देने के लिए ज्यादातर राज्यों में फिर से कारोबारी गतिविधियों को शुरू करने पर सरकार जोर दे रही है। जबकि कोरोना के संक्रमण के कारण ज्यादातर मजदूर अपने घरों को लौट रहे है।

चूंकि अपने गांव जाना चाह रहे मजदूरों की संख्या बहुत अधिक है इसलिए उन्हें ट्रेनों से ले जाया जा रहा है। कहना कठिन है कि विभिन्न शहरों में फंसे मजदूरों की संख्या कितनी होगी, लेकिन वह लाखों में तो होगी ही। हैरानी नहीं कि यह संख्या करोड़ का आंकड़ा छू ले। सवाल है कि यदि हमारे औद्योगिक शहर मजदूरों से खाली हो गए तो फिर आर्थिक-व्यापारिक गतिविधियों का थमा पहिया नए सिरे से गति कैसे पकड़ेगा?

यह अच्छा है कि कर्नाटक और तेलंगाना की सरकारें गांव जाने को तैयार मजदूरों से रुकने की अपील कर रही हैं, लेकिन केवल इतना ही पर्याप्त नहीं। उन्हें और साथ ही अन्य राज्यों को उन कारणों की तह तक जाना होगा जिसके चलते मजदूर अपने गांव जाने के लिए बेचैन हो उठे। इस बेचैनी का बड़ा कारण यही है कि लॉकडाउन के दौरान उनके खाने-रहने की जो व्यवस्था की गई वह संतोषजनक नहीं थी। जब कोई काम न होने से अपने भविष्य को लेकर अनिश्चित मजदूरों की उचित तरीके से देखभाल की जानी चाहिए थी तब ऐसा नहीं किया गया। इसी कारण उन्होंने अपने गांव जाने का निश्चय किया। इसके आसार कम हैं कि वे अपने निश्चय से डिगेंगे। वे भावनात्मक सहारे की तलाश में हैं और उन्हें लग रहा है कि इसकी पूर्ति उनके गांव-घर में ही हो सकेगी।

निःसंदेह किसी भी मजदूर को जबरन नहीं रोका जा सकता, लेकिन इसकी चिंता तो की ही जानी चाहिए कि आखिर उनके बगैर कारोबारी गतिविधियों को रफ्तार कैसे मिलेगी? यह चिंता इसलिए भी की जानी चाहिए, क्योंकि शहरों में अपनी उपेक्षा-अनदेखी से आहत मजदूरों में से तमाम ऐसे हैं जो फिर नहीं लौटना चाह रहे हैं। बेहतर होगा कि राज्य सरकारें अनिश्चय से घिरे हुए मजदूरों से केवल रुकने की ही अपील न करें, बल्कि उन्हें यह भरोसा भी दिलाएं कि उनके हितों की रक्षा के लिए हर संभव कदम उठाए जाएंगे।

यदि इन संभावित कदमों को लेकर कोई स्पष्ट घोषणा की जाए तो यह मुमकिन है कि एक बड़ी संख्या में मजदूर तुरंत गांव लौटने का इरादा त्याग दें। वर्तमान स्थिति में मजदूरों को रोकना भी आसान नही है क्योंकि उनकी पर्याप्त व्यवस्था भी करनी होगी ताकि उन्हें किसी प्रकार की परेशानी न हो और जीवन यापन भी बिना किसी बाधा के चलता रहे। जिन राज्यों से मजदूर जा रहे हैं उनके साथ ही उन राज्यों को भी सक्रिय होना चाहिए जहां के वे बाशिंदे हैं, क्योंकि उनके लिए गांव लौटे मजदूरों की रोजी-रोटी की व्यवस्था करना आसान काम न होगा। बेहतर हो कि केंद्र सरकार भी सक्रिय हो ताकि औद्योगिक शहरों को मजदूरों की कमी का सामना न करना पड़े।

-राजू श्रीवास्तव

चीन, पाकिस्तान और नेपाल के साथ सीमा विवाद मोदी की अग्निपरीक्षा

पूर्वी लद्दाख के गलवान में चीन से विवाद बातचीत से होते-होते झड़प तक पहुँच गया है। 15 जून की रात दोनों देशों के बीच हुई हिंसक झड़प में भारत ने 20 जवान गंवाए थे, वहीं सेना के सूत्रों के अनुसार पता चला था कि चीन को एक कर्नल समेत लगभग 43 चीनी सैनिकों का नुकसान हुआ था।

हालिया महीनों में भारत की ओर से नेपाल सीमा के पास सड़क निर्माण के काम की वजह से तनाव बढ़ा है। यहाँ कालापानी, लिंपियाधुरा और लिपुलेख को लेकर दोनों के बीच टकराव है। नेपाल का कहना है कि अनुच्छेद 370 हटाने के बाद भारत की ओर से जारी किए गए नए नक़्शे में विवादित जगहों को भारत के हिस्से में दिखाया गया है। इसके बाद नेपाल ने भी इन तीनों इलाक़ों को अपने हिस्से में दिखाते हुए देश का नया नक्शा प्रकाशित किया।

भारत और पाकिस्तान में भी कश्मीर को लेकर तनाव हमेशा ही रहा है। पिछले साल कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटाए जाने के बाद दोनों देशों के रिश्ते और बिगड़े हैं।

पाकिस्तान, चीन और नेपाल के साथ अक्सर भारत का सीमा विवाद सामने आता रहता है लेकिन इस समय भारत का तीनों पड़ोसियों से एक साथ सीमा पर उलझना बड़ी चुनौती बन गया है।

इस तरह तीनों पड़ोसियों के साथ भारत सीमा विवाद को लेकर जूझ रहा है। भारत के गृहमंत्री राजनाथ सिंह ने कहा है कि नेपाल के साथ 'रोटी-बेटी का रिश्ता' है और मसला बताचीत से हल होगा। इसके बाद भी नेपाल के रुख़ में कोई बदलाव नहीं आया है।

वहीं, सीएए और एनआरसी के मसले पर बांग्लादेश से भी भारत के संबंधों में खटास आ गई थी। नागरिकता क़ानून को लेकर हो रहे विरोध प्रदर्शनों के बीच बांग्लादेश के विदेश मंत्री अब्दुल मोमिन और गृह मंत्री असद उज़्ज़मान ख़ान ने अपना भारत दौरा रद्द कर दिया था।

कोरोना वयारस से लड़ाई और गिरती अर्थव्यवस्था के बीच सीमा पर पड़ोसियों से तनाव भारत के लिए एक गंभीर स्थिति बन गई है। ये स्थितियां कैसे बनीं और इससे निपट पाना भारत के लिए कितना चुनौतीपूर्ण होगा?

अब आगे क्या होगा?

जानकारों का मानना है कि चीन के साथ सीमा पर जो स्थिति बनी हुई है वो बहुत ज़्यादा गंभीर है। 1962 के बाद लद्दाख में दोनों सेनाओं की तरफ से कोई भी मौत नहीं हुई है। उसके बाद अरुणाचल प्रदेश और सिक्किम में जो घटनाएं हुईं, उनमें भी 1975 के बाद दोनों तरफ के किसी भी सैनिक की मौत नहीं हुई।

अब लद्दाख में भारतीय जवानों की मौत होना एक बहुत ही गंभीर और तनावपूर्ण मसला है। इससे भारत और चीन के बीच हो रही बातचीत पर नकारात्मक असर पड़ेगा।

भारत-चीन विवाद के 7 सबसे अहम कारण

भारत के साथ चीन का सीमा विवाद काफी पुराना है, लेकिन इसे सुलझाने के लिए चीन ने अब तक कोई गंभीर पहल नहीं की है। लद्दाख के दौलत बेग ओल्डी क्षेत्र में चीनी सैनिकों की घुसपैठ एक तरह से चीन की भारत को सचेत करने वाली कार्रवाई थी।

अब यह साफ हो गया है कि चीन सीमा विवाद को कूटनीतिक तरीके से हल करने के पक्ष में दिखाई नहीं दे रहा है। बार-बार घुसपैठ करने की अपनी हठधर्मिता से वह बाज नहीं आ रहा है। ऐसा प्रतीत होता है कि घुसपैठ की कार्रवाई उसकी किसी बड़ी योजना का हिस्सा है, जिसे वह बड़े ही योजनाबद्ध तरीके से अंजाम दे रहा है। इसे हमारे नीति निर्धारकों को समझना होगा। हमें हर बात के लिए तैयार रहना होगा।

जिस जगह पर चीन के सैनिकों ने कथित तौर पर घुसपैठ की, वह भारत के लिए बहुत ही संवेदनशील और रणनीतिक तौर पर अहम स्थान रखता है, क्योंकि यह कराकुरम दर्रे और सियाचिन के पास स्थित है। 1962 की लड़ाई के दौरान भी यही इलाका था, जिसमें भारतीय सैनिकों ने चीन को बराबरी की टक्कर दी थी। जिस जगह पर चीन के सैनिकों ने घुसपैठ की है, वह करीब 17 हजार फुट की ऊंचाई पर स्थित है और वहां पर पहुंचना भी आसान नहीं है।

चीन और भारत के बीच के इस इलाके में घुसपैठ को लेकर पहले भी इस तरह के विवाद होते रहे हैं, क्योंकि हर देश सीमा को अपने-अपने नजरिये से देखता है और दोनों देशों के बीच में आज तक किसी तरह का कोई समझौता नहीं हो सका है। भारत और चीन के बीच में कई इलाकों में वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) स्पष्ट नहीं है और यही तनाव का कारण बनती है।

1. तिब्बत

भारत व चीन के बीच तिब्बत, राजनीतिक व भौगोलिक तौर पर बफर का काम करता था। चीन ने 1950 में इसे हटा दिया। भारत तिब्बत को मान्यता दे चुका है, लेकिन तिब्बती शरणार्थियों के बहाने चीन इस मसले पर यदा-कदा नाक भौं सिकोड़ता रहता है।

2. अक्साई चिन रोड

लद्दाख इलाके में यह सड़क बना कर चीन ने विवाद का एक और मसला खड़ा किया है। चीन जम्मू-कश्मीर को भारत का अंग मानने में आनाकानी करता है, लेकिन पाक के कब्जे वाले कश्मीर को पाकिस्तान का भाग मानने में उसे कोई आपत्ति नहीं है।

3. विवादित सीमा

दोनों देशों के बीच करीब 3000 किमी की सीमा पर कोई स्पष्टता नहीं है। चीन जान-बूझ कर सीमा विवाद हल नहीं करना चाहता। वह सीमा विवाद को समय-समय पर भारत पर दबाव बनाने के लिए उपयोग करता है।

4. अरुणाचल

चीन पूरे अरुणाचल पर अपना दावा जताता रहा है। अरुणाचल में एक जल विद्युत परियोजना के लिए एशिया डेवलपमेंट बैंक से लोन लेने का चीन ने जम कर विरोध किया। अरुणाचल को विवादित बताने के लिए चीन वहां के निवासियों को स्टेपल वीजा देता है।

5. ब्रह्मपुत्र

चीन ब्रह्मपुत्र नदी पर कई बांध बना रहा है और उसका पानी वह नहरों के जरिये उत्तरी चीन के इलाकों में ले जाना चाहता है। भविष्य में इस मसले के बड़ा विवाद बनने की आशंकाओं को ध्यान में रख भारत इस मसले को द्विपक्षीय बातचीत में उठाता रहा है।

6. पीओके

पाक अधिकृत कश्मीर और गिलगित बालटिस्तान में चीनी गतिविधियां तेज हुई हैं। पूर्व सेना प्रमुख वीके सिंह ने खुद कहा कि इन इलाकों में तीन से चार हजार चीनी कार्यरत हैं, जिनमें पीएलए के लोग भी हैं।

7. साउथ चाइना सी

अपनी ऊर्जा की जरूरतों को ध्यान में रख चीन साउथ चाइना सी इलाके में अपना प्रभुत्व कायम करने की कोशिशें कर रहा है। यहां उसे वियतनाम, जापान और फिलीपींस से चुनौती मिल रही है। हाल में उसने वियतनाम की दो तेल ब्लॉक परियोजनाओं में शामिल भारतीय कंपनियों को चेतावनी दी की वह साउथ चाइना सी से दूर रहें।

भारत ने 59 चाइनीज ऐप्स पर लगाया बैन, बौखलाया चीन

पूर्वी लद्दाख के गलवान में चीन की धोखेबाजी से पूरा देश गुस्से में है। देश के हर शहर में विरोध प्रदर्शन हो रहा है और चीनी सामानों के बहिष्कार की मांग तेज हो गई है। इस बीच सरकार ने 59 चीनी ऐप पर बैन लगा दिया है। इसके साथ कई प्रोजेक्ट रद्द कर दिया है। भारत ने चीन के खिलाफ आर्थिक लड़ाई छेड़ दी है। बैन किये गये ऐप्स में टिक टॉक, यूसी ब्राउजर, हेलो और शेयर इट जैसे काफी पॉपुलर ऐप्स शामिल हैं।

भारत ने तर्क दिया है कि इन चाइनीज ऐप्स के सर्वर भारत से बाहर मौजूद हैं और इनके जरिए यूजर्स का डेटा चुराया जा रहा था। उधर चीनी सरकार ने भले ही इस मामले पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी हो, लेकिन चीन की सरकारी मीडिया ने भारत के कदम को अमेरिका की नक़ल करने वाला करार दिया है। चीन के सरकारी अखबार ने कहा है कि चीन की वस्तुओं के बहिष्कार के लिए भारत भी अमेरिका जैसे ही बहाने ढूंढ रहा है।

बता दें कि भारत सरकार ने स्पष्ट कहा है कि इन ऐप्स से देश की सुरक्षा और एकता को खतरा बना हुआ था, इसलिए ही इन्हें बैन करने का फैसला लिया गया है। सरकार ने इन्फर्मेशन टेक्नोलॉजी एक्ट के सेक्शन 69ए के तहत इन चीनी ऐप्स को बैन किया है। सूचना मंत्रालय को मिल रही शिकायतों में कहा गया था कि एंड्रायड और आईओएस प्लेटफॉर्म पर मौजूद कुछ चीनी मोबाइल ऐप्स का गलत इस्तेमाल किया जा रहा है।

ये ऐप्स गुपचुप और अवैध तरीके से यूजर का डेटा चोरी कर भारत के बाहर मौजूद सर्वर पर भेज रहे थे। इसके आलावा इंडियन साइबर क्राइम कोऑर्डिनेशन सेंटर, गृह मंत्रालय को भी इस तरह के खतरनाक ऐप्स को तुरंत बैन करने के लिए रिकमंडेशन भेजी गई थी।

चीनी सरकार ने भले ही इस मामले पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी हो, लेकिन चीन की सरकारी मीडिया ने भारत के कदम को अमेरिका (US) की नक़ल करने वाला करार दिया है। चीन के सरकारी अखबार ने कहा है कि चीन की वस्तुओं के बहिष्कार के लिए भारत भी अमेरिका जैसे ही बहाने ढूंढ रहा है।

भारत में टिकटॉक के 20 करोड़ यूजर–

देश में टिकटॉक के 20 करोड़ से अधिक यूजर्स हैं और यह ऐप गूगल प्ले स्टोर और एप्पल के ऐप स्टोर के टॉप 10 ऐप्स में से एक हैं। वहीं, सरकार द्वारा प्रतिबंधित की गईं अन्य ऐप में से ज्यादातर ऐप अभी भी प्ले स्टोर और ऐप स्टोर पर उपल हैं। ऐसे में माना जा रहा है कि आने वाले कुछ समय में इन ऐप्स को भी दोनों ही जगह से हटा दिया जाएगा, जिसके बाद कोई भी यूजर डाउनलोड नहीं कर सकेगा।

1. TikTok
2. Shareit
3. Kwai
4. UC Browser
5. Baidu map
6. Shein
7. Clash of Kings
8. DU battery saver
9. Helo
10. Likee
11. YouCam makeup
12. Mi Community
13. CM Browers
14. Virus Cleaner
15. APUS Browser
16. ROMWE
17. Club Factory
18. Newsdog
19. Beutry Plus
20. WeChat
21. UC News
22. QQ Mail
23. Weibo
24. Xender
25. QQ Music
26. QQ Newsfeed
27. Bigo Live
28. SelfieCity
29. Mail Master
30. Parallel Space
31. Mi Video Call – Xiaomi
32. WeSync
33. ES File Explorer
34. Viva Video – QU Video Inc
35. Meitu
36. Vigo Video
37. New Video Status
38. DU Recorder
39. Vault- Hide
40. Cache Cleaner
41. DU Cleaner
42. DU Browser
43. Hago Play
44. Cam Scanner
45. Clean Master
46. Wonder Camera
47. Photo Wonder
48. QQ Player
49. We Meet
50. Sweet Selfie
51. Baidu Translate
52. Vmate
53. QQ International
54. QQ Security Center
55. QQ Launcher
56. U Video
57. V fly Status Video
58. Mobile Legends
59. DU Privacy

गलवान विवाद पर भारत के साथ कई बड़े देश

भारत और चीन के बीच जो विवाद चल रहा है उसकी नजर पूरी दुनिया पर है। क्योंकि दो परमाणु संपन्न देशों के बीच विवाद का असर दुनिया की राजनीति पर पड़ता है। इस बीच अमेरिका के कई सीनेटर्स ने चीन को भारत के खिलाफ जानबूझ कर आक्रामक रवैया अपनाने के लिए लताड़ा है।

अमेरिकी सीनेटर मार्को रूबियो ने अमेरिका में भारत के राजदूत तरणजीत सिंह संधू से बात की। उन्होंने कहा कि चीन की ओर से बेवजह भारत के साथ तल्खी का माहौल बनाया जा रहा है, हम इस मसले पर भारत के साथ खड़े हैं। उन्होंने कहा कि भारत ने साफ कर दिया है कि भारत चीन के सामने झुकेगा नहीं।

उनके अलावा सीनेट के मेजोरिटी लीडर मिच मेकोनेल ने भी एक हफ्ते में दूसरी बार चीन को लताड़ा है। उन्होंने कहा कि चीन ने जापानी क्षेत्र में अपनी सबमरीन को शुरू कर दिया है, भारत के साथ जंग छेड़ दी है। चीन ने जानबूझकर ये माहौल पैदा किया है और भारत के साथ झगड़ा शुरू किया है। मिच ने कहा कि चीन ने भारत के 20 जवानों को मार दिया है।

आपको बता दें कि भारत और चीन के बीच जारी विवाद पर इससे पहले अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने बयान दिया था कि ये बहुत चिंता की बात है, वह दोनों देशों में बात करवाने को तैयार हैं।

वहीं, दूसरी ओर अमेरिकी विदेश मंत्री माइक पोम्पियो ने कहा था कि अमेरिका अपनी सेना को यूरोप से हटाकर एशियाई देशों के पास

गलवान घाटी पर चीन ने जो धोखा दिया है वो पूरी दुनिया ने देखा है. यही कारण है कि कई बड़े देश इस मसले पर भारत के साथ खड़े हैं।

तैनात करेगा। क्योंकि चीन लगातार भारत पर आक्रामक हो रहा है, इसके अलावा दक्षिणी चीन सागर में हरकत कर रहा है।

बता दें कि गलवान घाटी में भारत और चीन के सैनिकों के बीच पंद्रह जून को भिड़ंत हो गई थी। इसमें भारत के 20 जवान शहीद हो गए थे, इसी के बाद से दोनों देशों में तनाव की स्थिति है। अबतक बॉर्डर पर कई दौर की बात हुई है, लेकिन कुछ निर्णय नहीं निकल पाया है।

कितना बदल गया इंसान?

विकास श्रीवास्तव

वर्ष 2020 की शुरुवात से ही कोरोना वायरस महामारी ने इंसान और इंसान की दिनचर्या को ही बदल दिया। दुनिया भर की माया में परेशान लोगों के लिए कोरोना काल एक सबक लेकर आया। दुनिया की चकाचौंध को अपना जीवन समझने वालों को भी जीवन के भय ने साधारण तरीके से जीने को मजबूर कर दिया।

कोरोना महामारी ने जहां एक ओर दुनिया में तांडव मचाया वहीं दूसरी ओर इस महामारी ने लोगों वास्तविक जीवन का परिचय भी कराया। इस बीमारी ने मनुष्य को आत्मनिर्भर बनने के साथ परिवार की अहमियत को भी समझाया है।

ज्यादातर लोग काम और पैसे कमाने के चक्कर में घर से विमुख हो जाते है मगर इस महामारी ने लोगों को अपने घर और घरवालों की अहमियत समझने का मौका दिया।

लॉक डाउन में ज्यादातर लोगों ने घरों में रहकर योग और अध्यात्म को अपनाया जिससे लोगों को आत्मशांति का एहसास हुआ। दिन रात प्रगति की ओर अग्रसर दुनिया को ठहरने का मौका मिला और साथ ही आत्मचिंतन का भी। इस दरमियान तामसी प्रवृतियों पर रोक लगी और मानव के भीतर सात्विकता जन्म लिया।

इस महामारी ने उन कामगारों और श्रमिकों को अपने गृह जनपद की महत्ता को समझने का मौका दिया। घर से दूर रहकर दूसरे राज्यों का सुंदरीकरण करने वाले श्रमिक और कामगारों की कमर इस महामारी ने तोड़ दी उसके बाद उन्हें दिनों प्रवासी कहा गया।

अपने गृह जनपद लौटने पर मजबूर इन श्रमिकों में से ज्यादातर श्रमिक अब वापस नहीं जाना चाहते और अपने ही गृह जनपद में काम करना चाहते है। इस मुद्दे पर सभी राज्य की सरकारें अब चिंतित है और इन श्रमिकों को अपने ही गृह जनपद में रोजगार के संसाधन उपल कराने की जुगत में लगी हुयी है।

इस महामारी में लोगों को जीवन की महत्ता को समझाया और देश दुनिया के साथ परिवार के विषय में आत्मचिंतन करने का मौका दिया। इंसान को हर परिस्थिति अवसर बदलना ही संसार का नियम मानव धर्म भी है।

डिप्रेशन का शिकार होते युवा

निमांषी पांडेय

डिप्रेशन एक ऐसी बीमारी जो इंसान को नकारात्मक सोच की तरफ खींच ले जाती है। हम सभी के जीवन में अच्छे बुरे वक़्त जरूर आते है अच्छे वक़्त तो आसानी से कट जाता है मगर बुरा वक़्त आसानी से नहीं काट पाता है और काफी लम्बे समय तक जब कोई भी व्यक्ति परेशान हो तो उसके मन में खाली नकारात्मक सोच ही उत्पन्न होती है। डिप्रेशन एक ऐसी बीमारी है जो इंसान को अंदर ही अंदर खा जाती है। आप कब इस डिप्रेशन की चपेट में आ जायेंगे आपको खुद ही नहीं पता चलेगा लेकिन अगर आप लंबे समय तक लगातार नकारात्मक सोच के इर्द गिर्द घूम रहे या दुखी मनोदशा या फिर पसंदीदा गतिविधियों में भी दिलचस्पी न आने वाले लक्षण सामने आने लगें तो यह डिप्रेशन हो सकता है।

आज कल के दौर में किसी भी व्यक्ति को डिप्रेशन होने कोई बहुत बड़ी बात नहीं है। डिप्रेशन बहुत ही कॉमन बीमारी हो चुकी है आज कल आपको कहीं ना कहीं ज्यादा तर व्यक्तियों को डिप्रेशन से जूझते पाएंगे डिप्रेशन एक आम बीमारी हो गयी है। हर व्यक्ति कभी न कभी अपने जीवन में होने वाली चीजों से प्रभावित होता है जिसकी वजह से वो डिप्रेशन का शिकार हो सकता है।

अगर किसी व्यक्ति को डिप्रेशन की बीमारी हो जाती तो उस व्यक्ति को कभी अकेले ना छोड़े डिप्रेशन से गुजर रहे व्यक्ति से मेलजोल बढ़ाया जाए तो इससे उबरने में उस व्यक्ति की बड़ी मदद हो सकती है। हमेशा उसका ख्याल रखे ताकि उस व्यक्ति को कभी अकेलापन ना लगे। डिप्रेशन में अकेलापन अगर हो तब तो इंसान के मन में अजीब अजीब ख्याल आने लगते है और वह सिर्फ नकारात्मक चीजे ही सोचता है और कभी कभी तो डिप्रेशन वाला इंसान अपने जीवन को ही समाप्त कर लेता है । कहने को तो डिप्रेशन एक बीमारी है मगर ये बीमारी बहुत ज्यादा घातक भी साबित हो सकती है अगर इसका इलाज सही तरीके से ना करवाया जाए तो।

डिप्रेशन की बीमारी बच्चो से ले बुधो तक में नज़र आ रही है तथा युवा भी तेजी से इस बीमारी के शिकार हो रहे हैं। पढ़ाई का अत्यधिक बोझ, घर पर होमवर्क का टेंशन, माता-पिता द्वारा बच्चे को स्कूल में कम अंक मिलने पर डांटना, बच्चों को अपनी रुचि अनुरूप कार्य करने से रोकना आदि मुख्य कारण हैं बच्चों के डिप्रेशन में जाने के।

अंततः कारण अनेक पर बीमारी एक यानी डिप्रेशन। आम आदमी के जीवन की बात करे तो तो वे भी डिप्रेशन के शिकार होते है आये दिन हमारे यहाँ डिप्रेशन के कारण मौतें होती है कुछ व्यक्ति तो डिप्रेशन से उभर भी जाते है मगर ज्यादातर लोग इस बीमारी के आगे कमज़ोर पद जाते है और अपना जीवन समाप्त कर लेते है वही अगर बात करें बॉलीवुड की तो बॉलीवुड में भी बहुत से ऐसे सितारें है जो डिप्रेशन के शिकार हुए थे उनमे से कुछ ठीक हुए और जातरा ने तो डिप्रेशन के कारण अपना जीवन ही समाप्त कर लिया उनमे कई नाम जैसे परवीन बॉबी, गुरु दत्त, नफीसा जोसेफ, दिव्या भारती, सिल्क स्मिता, प्रत्युषा बनर्जी, और शुशांत सिंह राजपूत जैसे और भी कई सितारे है जिन्होंने आत्महत्या कर ली थी।

बात करें तो फेमस टीवी सीरियल 'बालिका वधू' में आनंदी का किरदार निभाने वाली एक्ट्रेस प्रत्युषा बनर्जी की तो प्रत्युषा अपने मुंबई वाले घर में मृत पाई गई थीं। उन्होंने पंखे से लटक कर आत्महत्या की थी। बता दें कि 1 अप्रैल 2016 को प्रत्युषा ने आत्महत्या की थी और उस दौरान वह 25 साल की थीं। ये हादसा 5 अप्रैल 1993 में हुआ था। बात करेंगे 70 के दशक की खूबसूरत और हिट एक्ट्रेस परवीन बॉबी की तो परवीन ने अपने फिल्मी करियर में एक से एक हिट फिल्म दी थी जिसमें 'नमक हलाल' और 'अमर अकबर एंथनी' जैसी हिट फिल्में भी शामिल है। परवीन बॉबी उस जमाने की बड़ी ग्लैमरस गर्ल मानी जाती थीं। माना जाता है कि प्यार में धोखा मिलने की वजह से उन्होंने सुसाइड किया था और यह भी माना जाता है कि उन्होंने डायबिटीज की वजह से दम तोड़ा था। आज भी उनकी मौत की गुत्थी सुलझी नहीं है। मौत के वक्त परवीन की उम्र 56 साल थी। 50 और 60 के दशक में भारतीय फिल्म इंडस्ट्री के दिग्गज माने जाने वाले गुरुदत्त ने भी जहर खाकर जान दे दी थी। उन्हें बेहतरीन फिल्म निर्देशक के अलावा उतना ही बेहतरीन अभिनेता भी माना जाता था। अक्टूबर 1964 में मुंबई के पेड्डर रोड इलाके में स्थित अपने अपार्टमेंट में वे मृत पाए गए थे।आत्महत्या से पहले उनकी पत्नी से बेटी से मिलने को लेकर लड़ाई हुई थी। फिल्म 'निशब्द' और 'गजनी' में नजर आईं एक्ट्रेस जिया खान की सुसाइड की खबर से पूरे बॉलीवुड को धक्का लगा था। जिया ने अपने घर में फंदे से लटक कर 25 साल की उम्र में ही अपना जीवन समाप्त कर लिया था। वहीं, जिया की मां राबिया खान ने इसे सुसाइड ना मानकर मर्डर करार दिया था। उन्होंने एक्टर आदित्य पंचोली के बेटे सूरज पंचोली को इस सुसाइड का ज़िम्मेदार ठहराया था। बता दें कि जिया की मौत तक सूरज और जिया एक-दूसरे से प्यार करते थे। जिया ने मरने से पहले एक सुसाइड नोट भी लिखा था जिसमे उन्होंने अपने मन में उठे सारे विचारों को व्यक्त किया था। जिया खान प्यार में मिले धोके के कारण डिप्रेशन का शिकार हुई थी और वो प्यार में मिले धोखे और अकेलेपन को संभाल न पायी और डिप्रेशन में चली गयी और अपना जीवन समाप्त कर लिया। ठीक वैसे ही अब शुशांत सिंह राजपूत ने भी आत्महत्या कर ली कहा जा रहा की वे लम्बे समय से डिप्रेशन के शिकार हो गए थे। कई बैनर ने उन्हें बैन कर दिया था जिसकी वजह हो सकती है उनके डिप्रेशन की और वो भी डिप्रेशन के आगे जीवन हार गए।

डिप्रेशन एक ऐसी बीमारी है जिसने आम आदमी, बॉलीवुड और टीवी जगत के कई सितारों की जान ले ली है। यह सभी अपने जीवन में अकेलेपन और डिप्रेशन की वजह से अपनी जान ली थी जब जीवन में असफलता और अकेलापन मिलता है तो इंसान बहुत आसानी से डिप्रेशन की तरफ खींचा चला जाता है और इसी डिप्रेशन के कारण मजबूर होकर और जीवन से हतास होकर आत्महत्या कर लेता।

सतयुग के योग से कलयुग में मिलेगा कई बीमारियों से मुक्ति

संस्कृत धातु 'युज' से निकला है, जिसका मतलब है व्यक्तिगत चेतना या आत्मा का सार्वभौमिक चेतना या रूह से मिलन।

गुरुदेव श्री श्री रवि शंकर कहते हैं, "योग सिर्फ व्यायाम और आसन नहीं है। यह भावनात्मक एकीकरण और रहस्यवादी तत्व का स्पर्श लिए हुए एक आध्यात्मिक ऊंचाई है, जो आपको सभी कल्पनाओं से परे की कुछ एक झलक देता है।"

क्या आप किसी योगासन के बारे में जानना चाहते है? योगासनों की सूची एवं जानकारी हेतु

योग क्या है? –

योग सही तरह से जीने का विज्ञान है और इस लिए इसे दैनिक जीवन में शामिल किया जाना चाहिए। यह हमारे जीवन से जुड़े भौतिक, मानसिक, भावनात्मक, आत्मिक और आध्यात्मिक, आदि सभी पहलुओं पर काम करता है। योग का अर्थ एकता या बांधना है। इस शब्द की जड़ है संस्कृत शब्द युज, जिसका मतलब है जुड़ना। योग, भारतीय ज्ञान की पांच हजार वर्ष पुरानी शैली है। हालांकि कई लोग योग को केवल शारीरिक व्यायाम ही मानते हैं, जहाँ लोग शरीर को मोडते, मरोड़ते, खींचते हैं और श्वास लेने के जटिल तरीके अपनाते हैं। यह वास्तव में केवल मनुष्य के मन और आत्मा की अनंत क्षमता का खुलासा करने वाले इस गहन विज्ञान के सबसे सतही पहलू हैं, योग का अर्थ इन सब से कहीं विशाल है। योग विज्ञान में जीवन शैली का पूर्ण सार आत्मसात किया गया है। व्यावहारिक स्तर पर, योग शरीर, मन और भावनाओं को संतुलित करने और तालमेल बनाने का एक साधन है। यह योग या एकता आसन,प्राणायाम, मुद्रा, बँध, षट्कर्म और ध्यान के अभ्यास के माध्यम से प्राप्त होती है। तो योग जीने का एक तरीका भी है और अपने आप में परम उद्देश्य भी। योग सबसे पहले लाभ पहुँचाता है बाहरी शरीर को, जो ज्यादातर लोगों के लिए एक व्यावहारिक और परिचित शुरुआती जगह है। जब इस स्तर पर असंतुलन का अनुभव होता है, तो अंग, मांसपेशियां और नसें सद्भाव में काम नहीं करते हैं, बल्कि वे एक-दूसरे के विरोध में कार्य करते हैं। बाहरी शरीर (फिज़िकल बॉडी) के बाद योग मानसिक और भावनात्मक स्तरों पर काम करता है। जो लोग रोज़मर्रा की जिंदगी के तनाव और मानसिक परेशानियों से पीड़ित रहते हैं उनके लिए योग बहुत ही फायदेमंद होता है। योग इनका इलाज शायद तुरंत नहीं प्रदान करता लेकिन धीरे धीरे योग से मानसिक तनाव ख़तम होने लगता है। योग के सही मतलब और संपूर्ण ज्ञान के बारे में जागरूकता अब लगातार बढ़ रही है।

योग के लाभ –

शारीरिक और मानसिक उपचार योग के सबसे अधिक लाभों में से एक है। यह इतना शक्तिशाली और प्रभावी इसलिए है क्योंकि यह सद्भाव और एकीकरण के सिद्धांतों पर काम करता है। योग अस्थमा, मधुमेह, रक्तचाप, गठिया, पाचन विकार और अन्य बीमारियों में चिकित्सा के एक सफल विकल्प है, ख़ास तौर पर वहाँ जहाँ पर आधुनिक विज्ञान आजतक उपचार देने में सफल नहीं हुआ है। एचआईवी (HIV) पर योग के प्रभावों पर अनुसंधान वर्तमान में आशाजनक परिणामों के साथ चल रहा है। चिकित्सा वैज्ञानिकों के अनुसार, योग चिकित्सा तंत्रिका और अंतःस्रावी तंत्र में बनाए गए संतुलन के कारण सफल होती है जो शरीर के अन्य सभी प्रणालियों और अंगों को सीधे प्रभावित करती है।

अधिकांश लोगों के लिए, हालांकि, योग केवल तनावपूर्ण समाज में स्वास्थ्य बनाए रखने का मुख्य साधन हैं। योग बुरी आदतों के प्रभावों को कम करने में काफी मदद देता है, जैसे कि सारे दिन कुर्सी पर बैठे रहना, मोबाइल फोन को ज़्यादा इस्तेमाल करना, व्यायाम ना करना, ग़लत ख़ान-पान रखना इत्यादि। इनके अलावा योग के कई आध्यात्मिक लाभ भी हैं। इनका विवरण करना आसान नहीं है, क्योंकि यह आपको स्वयं योग अभ्यास करके ही महसूस करना पड़ेगा। हर व्यक्ति को योग अलग रूप से लाभ पहुँचाता है। तो योग को अपने जीवन में अवश्य अपनायें और अपनी मानसिक, भौतिक, आत्मिक और अध्यात्मिक सेहत में सुधार लायें।

योग का इतिहास–

योग दस हजार साल से भी अधिक समय से प्रचलन में है। योग सबसे पुराने जीवन्त साहित्य ऋग्वेद में पाया जाता है। योग हमें फिर से सिु-सरस्वती सभ्यता के दर्शन कराता है। ठीक उसी सभ्यता से, पशुपति मुहर जिस पर योग मुद्रा में विराजमान एक आकृति है, जो उस प्राचीन काल में योग की व्यापकता को दर्शाती है। हालांकि, प्राचीनतम उपनिषद, बृहदअरण्यक में भी, योग का हिस्सा बन चुके, विभिन्न शारीरिक अभ्यासों का उल्लेख मिलता है। छांदोग्य उपनिषद में प्रत्याहार का तो बृहदअरण्यक के एक स्तवन (वेद मंत्र) में प्राणायाम के अभ्यास का उल्लेख मिलता है। "योग" के वर्तमान स्वरूप के बारे में, पहली बार उल्लेख शायद कठोपनिषद में आता है, यह यजुर्वेद की कथाशाखा के

अंतिम आठ वर्गों में पहली बार शामिल होता है जोकि एक मुख्य और महत्वपूर्ण उपनिषद है। अथर्ववेद में उल्लेखित संन्यासियों के एक समूह, वार्ता (सभा) द्वारा, शारीरिक आसन जोकि योगासन के रूप में विकसित हो सकता है पर बल दिया गया है यहाँ तक कि संहिताओं में उल्लेखित है कि प्राचीन काल में मुनियों, महात्माओं, विभिन्न साधु और संतों द्वारा कठोर शारीरिक आचरण, ध्यान व तपस्या का अभ्यास किया जाता था। योगा धीरे-धीरे एक अवधारणा के रूप में उभरा है और भगवद गीता के साथ साथ, महाभारत के शांतिपर्व में भी योग का एक विस्तृत उल्लेख मिलता है। बीस से भी अधिक उपनिषद और योग वशिष्ठ उपल हैं, जिनमें महाभारत और भगवद गीता से भी पहले से ही, योग के बारे में, सर्वोच्च चेतना के साथ मन का मिलन होना कहा गया है। हिंदू दर्शन के प्राचीन मूलभूत सूत्र के रूप में योग की चर्चा की गई है और शायद सबसे अलंकृत पतंजलि योगसूत्र में इसका उल्लेख किया गया है। पतंजलि का लेखन भी अष्टांग योग के लिए आधार बन गया। जैन धर्म की पांच प्रतिज्ञा और बौद्ध धर्म के योगाचार की जडें पतंजलि योगसूत्र मे निहित हैं। मध्यकालीन युग में हठ योग का विकास हुआ।

योग के नियम-

अगर आप यह कुछ सरल नियमों का पालन करेंगे, तो अवश्य योग अभ्यास का पूरा लाभ पाएँगे

-किसी गुरु के निर्देशन में योग अभ्यास शुरू करें।

-सूर्योदय या सूर्यास्त के वक़्त योग का सही समय है।

-योग करने से पहले स्नान ज़रूर करें।

-योग खाली पेट ही करें। योग करने से 2 घंटे पहले कुछ ना खायें।

-आरामदायक सूती कपड़े पहनें।

-योग करने से पहले सब बुरे ख़याल दिमाग़ से निकाल दें और मन को शांत कर लें।

-किसी शांत वातावरण और सॉफ जगह में योग अभ्यास करें।

-अपना पूरा ध्यान अपने योग अभ्यास पर ही केंद्रित रखें।

-योग अभ्यास धैर्य और दृढ़ता से करें।

-अपने शरीर के साथ ज़बरदस्ती बिल्कुल ना करें।

-योग के लाभ महसूस होने मे वक़्त लगता है।

-निरंतर योग अभ्यास जारी रखें।

-योग करने के 30 मिनिट बाद तक कुछ ना खायें और ना ही 1 घंटे तक नहायें।

-प्राणायाम हमेशा आसन अभ्यास करने के बाद करें।

-अगर कोई मेडिकल तकलीफ़ हो तो पहले डॉक्टर से ज़रूर सलाह करें।

-अगर तकलीफ़ बढ़ने लगे या कोई नई तकलीफ़ हो जाए तो तुरंत योग अभ्यास रोक दें।

-योगाभ्यास के अंत में हमेशा शवासन करें।

योग के 4 प्रमुख प्रकार या योग के चार रास्ते हैं-

राज योग- राज का अर्थ शाही है और योग की इस शाखा का सबसे अधिक महत्वपूर्ण अंग है ध्यान। इस योग के आठ अंग है, जिस कारण से पतंजलि ने इसका नाम रखा था अष्टांग योग। इसे योग सूत्र में पतंजलि ने उल्लिखित किया है। यह 8 अंग इस प्रकार है: यम (शपथ लेना), नियम (आचरण का नियम या आत्म-अनुशासन), आसन, प्राणायाम (श्वास नियंत्रण), प्रत्याहार (इंद्रियों का नियंत्रण), धारण (एकाग्रता), ध्यान (मेडिटेशन), और समाधि (परमानंद या अंतिम मुक्ति)। राज योग आत्मविवेक और ध्यान करने के लिए तैयार व्यक्तियों को आकर्षित करता है। आसन राज योग का सबसे प्रसिद्ध अंग है, यहाँ तक कि अधिकतर लोगों के लिए योग का अर्थ ही है आसन। किंतु आसन एक प्रकार के योग का सिर्फ़ एक हिस्सा है। योग आसन अभ्यास से कहीं ज़्यादा है।

कर्म योग- अगली शाखा कर्म योग या सेवा का मार्ग है और हम में से कोई भी इस मार्ग से नहीं बच सकता है। कर्म योग का सिद्धांत यह है कि जो आज हम अनुभव करते हैं वह हमारे कार्यों द्वारा अतीत में बनाया गया है। इस बारे में जागरूक होने से हम वर्तमान को अच्छा भविष्य बनाने का एक रास्ता बना सकते हैं, जो हमें नकारात्मकता और स्वार्थ से बाध्य होने से मुक्त करता है। कर्म आत्म-आरोही कार्रवाई का मार्ग है। जब भी हम अपना काम करते हैं और अपना जीवन निस्वार्थ रूप में जीते हैं और दूसरों की सेवा करते हैं, हम कर्म योग करते हैं।

भक्ति योग- भक्ति योग भक्ति के मार्ग का वर्णन करता है। सभी के लिए सृष्टि में परमात्मा को देखकर, भक्ति योग भावनाओं को नियंत्रित करने का एक सकारात्मक तरीका है। भक्ति का मार्ग हमें सभी के लिए स्वीकार्यता और सहिष्णुता पैदा करने का अवसर प्रदान करता है।

ज्ञान योग- अगर हम भक्ति को मन का योग मानते हैं, तो ज्ञान योग बुद्धि का योग है, ऋषि या विद्वान का मार्ग है। इस पथ पर चलने के लिए योग के ग्रंथों और ग्रंथों के अध्ययन के माध्यम से बुद्धि के विकास की आवश्यकता होती है। ज्ञान योग को सबसे कठिन माना जाता है और साथ ही साथ सबसे प्रत्यक्ष। इसमें गंभीर अध्ययन करना होता है और उन लोगों को आकर्षित करता है जो बौद्धिक रूप से इच्छुक हैं।

धीरेन्द्र प्रताप

चीन को कैसे करें चित, क्या आर्थिक लड़ाई से जीतेगा भारत

रमेश उपाध्याय

गलवान घाटी में भारत और चीन के सैनिकों के साथ हुई हिंसक झड़प के बाद से ही देशभर में चीन और चीन के सामानों का भले ही विरोध हो रहा हो मगर बहुत से लोग ये नहीं जानते कि भारत बाजारों में चीन अपने कुल निर्यात का केवल 3 प्रतिशत ही भागीदारी देता है। इस स्थिति में चीन को आर्थिक रूप से पटखनी देने का विचार भारत के लिए बहुत प्रभावकारी नहीं होने वाला है।

चीन आर्थिक रूप से भारत से मजबूत स्थिति में है मगर चीन के सामानों के विरोध से प्रभाव तो पड़ेगा ही। ये प्रभाव खासकर उनपर पड़ेगा जो भारत में चीन की हिमायत करते है। चीनी अखबार ग्लोबल टाइम्स ने भी भारत और चीन के बीच व्यापर के संबंध में समाचार प्रकाशित कर बताया कि अगर दोनों देशों के बीच हालात नहीं सुधरते तो इसका प्रभाव दोनों देशों के व्यापर पर पड़ेगा।

एक रिपोर्ट के अनुसार भारत से अधिक मात्रा में सामान खरीदता है मगर बेचता कम मात्रा में है जिससे भारत को घाटा भी अधिक चीन से ही होता है। दोनों देशों के बीच इस अंतर् को समझने के लिए व्यापारिक संबंधों को समझाना बहुत जरुरी है।

2018 में दोनों देशों के बीच 95.7 अरब डॉलर रुपये का व्यपार हुआ। इस व्यापार में भारत ने चीन में 18.83 अरब डॉलर रुपये का निर्यात किया वहीं चीन से 76.87 अरब डॉलर रुपये का आयात किया। अब आप समझिए कि चीन भारत से लगभग 5 गुने से ज्यादा का व्यापार करता है।

इसीप्रकार से चीन बाकी देशों के साथ भी व्यापार करता है। इस कोरोना काल मे चीन ने ही ज्यादातर देशों को पीपीई किट और मेडिकल इक्यूपमेंट्स उपल करवाया।

वास्तव में चीन बजी भारत के साथ अपने रिश्ते खराब नही करना चाहता मगर LAC पर चीनी सेना की कायरतापूर्ण रवैये ने संभलने का कभी मौका ही नही दिया। भारत और चीन के रिश्ते पहले से ही कुछ खास नही रहे है।

लेकिन इस बार चीन को भरतबसे करारी शिकस्त मिली है। चीन भी इस खतरे से अन्जान नही है। वैसे भी कोरोना वायरस महामारी के कारण पूरी दुनिया मे चीन की किरकिरी हो गयी है और अगर इस समय भारत से युद्ध हुआ तो नाको चने चबाना पड़ेगा। भारत की सेना की ताकत डरा हुआ चीन लद्दाख मुद्दे पर लगातर बैक फुट आ गया है

चीन अब भारत को छोड़ नेपाल की जमीनों पर कर रहा कब्जा

चीन अपनी नापाक हरकतों से बाज नहीं आ रहा है। भारत के लद्दाख में बुरी तरह से मात खाने के बाद चीन ने अब नेपाल का रुख किया है। चीन ने नेपाल की 33 हेक्टेयर जमीन पर कब्ज़ा कर लिया है।

दरअसल चीन सिर्फ भारत ही नहीं बल्कि देशों से सीमा विवाद में उलझा हुआ है। वियतनाम, उत्तर कोरिया, मंगोलिया, रूस और कजाकिस्तान शामिल है। इन सभी देशों से चीन का सीमा क्षेत्र को लेकर विवाद हो चुके है।

नेपाल सरकार के मुताबिक चीन अब तक नेपाल की कुल 10 जगहों पर कब्ज़ा कर चुका है। भारत के खिलाफ विवादित नेपाल सरकार से अपील की है कि चीन के द्वारा हिमालय और रुई गांव पर कब्जा किये जाने के खिलाफ कार्यवाई करें।

आपको बता दें कि नेपाल ने 11 जगहों की लिस्ट जारी की है जिसमे 10 जगहों पर चीन ने कब्ज़ा जमा रखा है। चीन नेपाल की जमीन पर कब्जा कर नदियों की धारा

क्षेत्रफ़ल के विस्तारीकरण को चीन ने महाशक्ति बनने का सूत्र बना लिया है और सिर्फ भारत ही नहीं बल्कि 13 अन्य देशों (जो चीन की सीमा से लगे हुए है) से भी चीन से सीमा विवाद है।

चीन की सीमा से सटे देश जिनमें तजाकिस्तान, किर्गिस्तान, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, भारत, नेपाल, भूटान, म्यांमार, लाओस, नक्शा जारी करने के बाद नेपाल कम्युनिस्ट सरकार चीन की इस हरकत पर चुप्पी साधे हुए है।

नेपाल में विपक्ष लगातार सरकार पर सवालिया निशान खड़े कर रहा है। इस मामले में विपक्ष नेपाली कांग्रेस के उपाध्यक्ष और नेपाल के उपप्रधानमंत्री बिमलेंद्र निधि ने आरोप लगाते हुए कहा है कि चीन नेपाल की जमीन पर कब्जा कर रहा है। उन्होंने बदलकर प्राकृतिक सीमा बना दी है।

दरअसल चीन तिब्बत स्वायत क्षेत्र (TAR) में सड़क निर्माण कर रहा है जिससे नदियां और सहायक नदियों का रास्ता बदल गया है।

आरती पाण्डेय

युवाओ के लिए बेरोजगारी देश के सामने एक प्रमुख समस्या

रवि पटेल

बेरोजगारी देश के सामने एक प्रमुख समस्या है जो आज कल के युवा झेल रहे है। यहाँ पर बेरोजगार युवक-युवतियों की संख्या दिन पर दिन बढ़ती जा रही है। स्वतंत्रता के इतने वर्षों बाद भी सभी को रोजगार देने के अपने लक्ष्य से हम मीलों दूर हैं।

बेरोजगारी की बढ़ती समस्या निरंतर हमारी प्रगति, शांति और स्थिरता के लिए चुनौती बन रही है। हमारे देश में बेरोजगारी के अनेक कारण हैं। अशिक्षित बेरोजगार के साथ शिक्षित बेरोजगारों की संख्या भी निरंतर बढ़ती जा रही है। देश के 90% किसान अपूर्ण या अर्द्ध बेरोजगार हैं जिनके लिए वर्ष भर कार्य नहीं होता है। वे केवल फसलों के समय ही व्यस्त रहते हैं। शेष समय में उनके करने के लिए खास कार्य नहीं होता है। यदि हम बेरोजगारी के कारणों का अवलोकन करें तो हम पाएँगे कि इसका सबसे बड़ा कारण देश की निरंतर बढ़ती जनसंख्या है। हमारे संसाधनों की तुलना में जनसंख्या वृद्धि की गति कहीं अधिक है जिसके कारण देश का संतुलन बिगड़ता जा रहा है।

इसका दूसरा प्रमुख कारण हमारी शिक्षा-व्यवस्था है। वर्षो से हमारी शिक्षा पद्धति में कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ है। हमारी वर्तमान शिक्षा पद्धति का आधार प्रायोगिक नहीं है। यही कारण है कि उच्च शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् भी हमें नौकरी नहीं मिल पाती है।

बेरोजगारी का तीसरा प्रमुख कारण हमारे लघु उद्योगों का नष्ट होना अथवा उनकी महत्ता का कम होना है। इसके फलस्वरूप देश के लाखों लोग अपने पैतृक व्यवसाय से विमुख होकर रोजगार की तलाश में इधर-उधर भटक रहे हैं।

आज के समय में आवश्यकता इस बात की है कि बेरोजगारी के मूलभूत कारणों की खोज के पश्चात् इसके निदान हेतु कुछ सार्थक उपाय किए जाएँ । इसके लिए सर्वप्रथम हमें अपने छात्र-छात्राओं तथा युवक-युवतियों की मानसिकता में परिवर्तन लाना होगा।

यह तभी प्रभावी हो सकता है जब हम अपनी शिक्षा पद्धति में सकारात्मक परिवर्तन लाएँ। उन्हें आवश्यक व्यावसायिक शिक्षा प्रदान करें जिससे वे शिक्षा का समुचित प्रयोग कर सकें। विद्यालयों में तकनीकी एवं कार्य पर आधारित शिक्षा दें जिससे उनकी शिक्षा का प्रयोग उद्योगों व फैक्ट्रियों में हो सके और वे आसानी से नौकरी पा सकें।

इस दिशा में सरकार निरंतर कार्य कर रही है। अपनी पंचवर्षीय व अन्य योजनाओं के माध्यम से लघु उद्योग के विकास के लिए वह निरंतर प्रयासरत है।

सभी सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में तकनीकी तथा व्यवसायिक शिक्षा को प्रोत्साहन दिया जा रहा है। बढ़ती जनसंख्या को नियंत्रण में लेने हेतु विभिन्न परिवार कल्याण योजनाओं को लागू किया गया जा रहा है। सभी बड़े शहरों में रोजगार कार्यालय खोले गए हैं जिनके माध्यम से युवाओं को रोजगार की सुविधा प्रदान की जाती है।

परंतु विभिन्न सरकारों ने यह स्वीकार किया है कि रोजगार कार्यालयों के माध्यम से बहुत थोड़ी संख्या में ही बेराजगारों को रोजगार दिया जा सकता है क्योंकि सभी स्थानों पर जितने बेकार हैं उसकी तुलना में रिक्तियों की संख्या न्यून है। इस कारण बहुत से लोग असंगठित क्षेत्र में अत्यंत कम पारिश्रमिक पर कार्य करने के लिए विवश हो रहे हैं। **शेष पेज न. 46 पर**

भारतीयों के हाथ में जो मोबाइल फोन हैं, उनमें चीन की कितनी हिस्सेदारी है?

देश में कोरोना का केहर बढ़ता ही जा रहा और यह वायरस की उपज चाइना में हुई और अब चाइना अपने ऊपर से ध्यान हटाने के लिए भारत के साथ लगातार झड़प किया जा रहा और इसी के चलते भारत ने कई फैसले लिए है। वैसे भी ये कोई नयी बात नहीं है चीन शुरू से यही करता आया है। मई के महीने में पीएम नरेंद्र मोदी ने 'आत्मनिर्भर भारत' की बात की और फिर उसके बाद लद्दाख में सीमा पर चीन से तनाव हो गया। 15 जून को भारत और चीन के बीच हुए हिंसक झड़प में भारत के 20 जवान शहीद हो गए। चीनी सेना को भी काफी नुकसान होने की खबरें सामने आयीं। जब से सीमा पर तनाव की खबरें सामने आई हैं, तब भारत के लोगों में चीन के सामान के बहिष्कार की बात हो रही है। लोगों से चीनी प्रॉडक्ट नहीं खरीदने की अपील की जा रही है। चीनी कंपनियों के ही बनाए गये स्मार्टफोन और ऐप से चीनी सामान के बहिष्कार की बात हो रही है.

इस खबर में हम इस बात पर चर्चा करेंगे कि ऐसे समय में जब 'बॉयकॉट चाइनीज प्रॉडक्ट्स' के ट्रेंड्स चल रहे हैं, मोबाइल फोन से ही कैम्पेन लॉन्च किए जा रहे हैं, भारतीय बाजार में चीन के स्मार्टफोन की हिस्सेदारी कितनी है ये बताने की जरुरत नहीं है। 'मेक इन इंडिया' के तहत बनने वाले कल-पुर्जे कहां से आते हैं। एपल जैसे ब्रांड के फोन की मैन्युफैक्चरिंग कहां होती है? स्मार्टफोन मार्केट में भारतीय कंपनियां कहां खड़ी हैं?

रिसर्च फर्म काउंटरपॉइंट की रिपोर्ट के मुताबिक, 2020 की पहली तिमाही यानी जनवरी से मार्च के बीच भारतीय स्मार्टफोन मार्केट में चीनी कंपनियों की हिस्सेदारी 70% से भी ज्यादा रही है. कहने का मतलब ये है कि 100 में 70 लोगों के पास चीन के स्मार्टफोन हैं। देश के टॉप-5 स्मार्टफोन ब्रांड में से चार पर चीन का कब्ज़ा हैं. सबसे ज्यादा 30% मार्केट शेयर शाओमी का है। दूसरे नंबर पर 17% मार्केट शेयर के साथ वीवो है। टॉप-5 में सिर्फ सैमसंग ही शामिल है, जो कि दक्षिण कोरियाई कंपनी है। सैमसंग का मार्केट शेयर भारत में 16% है।

भारत का स्मार्टफोन मार्केट करीब दो लाख करोड़ रुपए का है। इसमें से ज्यादातर शेयर चीनी कंपनियों का है।

साल 2019 में भारत ने अमेरिका को पीछे छोड़कर दुनिया में दूसरे सबसे बड़े स्मार्टफोन के बाजार का दर्जा हासिल किया था। काउंटरपॉइंट रिसर्च के मुताबिक, भारत के बाजार में 15.8 करोड़ स्मार्टफोन में से करीब 72 फीसदी या 11.4 करोड़ स्मार्टफोन चीन के बने हैं। साल 2019 में शाओमी ने भारत में सबसे ज्यादा 4.36 करोड़ स्मार्टफोन बेचे, जो कि किसी मोबाइल ब्रांड का एक साल में सबसे ज्यादा बिक्री का रिकॉर्ड है। पिछले साल शाओमी की बिक्री 9.2 फीसदी और बाजार में हिस्सेदारी 28.6 फीसदी बढ़ गयी

साल 2014 के बाद सब बदल गया!

ये आंकड़े दिखाते हैं कि भारतीय स्मार्टफोन बाजार में चीनी कंपनियों की हिस्सेदारी कितनी है। साल 2014 में चीनी स्मार्टफोन निर्माता कंपनियों ने भारत के बाजार में दस्तक दी थी और देखते ही देखते बाजार पर कब्ज़ा भी कर लिया। कीमत कम होने और ज्यादा फीचर की वजह से लोगों ने इन स्मार्टफोन को हाथों-हाथ लिया। फिर माइक्रोमैक्स, लावा, इंटेक्स, कार्बन जैसी भारतीय स्मार्टफोन कंपनियों का बाजार खत्म होता चला गया। जिसके बाद इनमें से कई कंपनियां बंद होने की कगार पर चली गईं। साल 2014 से पहले माइक्रोमैक्स का भारतीय बाजार में बेहतर मार्केट शेयर था। लेकिन चीन की कंपिनयों के मार्केट में आते ही भारतीय कंपनियों का मार्केट खत्म होने लगा। दूसरी वजह ये थी की लगातार चीनी कंपनियों द्वारा टेक्नोलॉजी का इंप्रूव होना भी था। भारतीय कंपनी माइक्रोमैक्स अभी भी मार्किट में स्मार्टफोन बेच रही है, लेकिन उसकी हिस्सेदारी ना के बराबर हो गयी है।

ज्यादातर फोन असेंबल होते हैं-

साल 2015 में 'मेक इन इंडिया' कार्यक्रम शुरू हुआ। मकसद था देश में ही प्रॉडक्ट की मैन्युफैक्चरिंग। चीन की स्मार्टफोन कंपनियों ने अपने प्लांट इंडिया में लगाए। लेकिन मैन्चुफैक्चरिग की जगह असेंबल पर जोर दिया। मतलब, भारत में फोन बनाने की बजाय उसके अलग-अलग पार्ट को अन्य देशों से मंगाकर इंडिया में असेंबल करके फोन तैयार किया।

वित्त वर्ष 2019-20 में भारत ने 41.5 मिलियन यानी 4.15 करोड़ फोन निर्यात किए। वहीं 5.6 मिलियन यानी 56 लाख फोन आयात किए गए। भारत ने ज्यादा मोबाइल फोन का निर्यात किया। लेकिन इसका मतलब ये नहीं है कि हम इन फोन का पूरी तरह से उत्पादन कर रहे हैं। इंडियन सेलुलर एंड इलेक्टॉनिक्स एसोसिएशन के मुताबिक, देश में मोबाइल फोन मैन्युफैक्चरिंग इकाइयां 2014 में सिर्फ दो थीं, जो 2018 में बढ़कर 268 हो गई हैं। लेकिन यहां ज्यादातर सेलफोन असेंबल होते हैं, न कि मैन्युफैक्चर।

साल 2017 में सरकार ने एक विनिर्माण कार्यक्रम शुरू किया था। इसके तहत मोबाइल पार्ट्स के लोकल सोर्सिंग को प्रोत्साहित किया जाता है। इसके तहत चार्जर, माइक्रोफोन, फोन कैमरा आदि उत्पादों का आयात करने पर कस्टम ड्यूटी देनी होगी, लेकिन इनके निर्माण के लिए जरूरी पार्ट्स मंगाने पर कस्टम ड्यूटी नहीं देनी होगी। इससे क्या हुआ कि भारत में मोबाइल फोन के पार्ट्स मंगाकर असेंबल करना सस्ता हो गया।

सरकार ने पॉलिसी में बदलाव करके मोबाइल फोन के पार्ट्स के आयात को प्रोत्साहन दिया। इससे मोबाइल कंपोनेंट का आयात बढ़ा है। क्योंकि भारत कई कीमती पार्ट्स की मैन्युफैक्चरिंग नहीं करता है। एक मोबाइल फोन के निर्माण के लिए 300 से ज्यादा कंपोनेंट और सब-कंपोनेंट की जरूरत होती है। अब भी भारत में मैन्युफैक्चरिंग की जगह ज्यादातर स्मार्टफोन असेंबल हो रहे हैं। और इसके अधिकांश कल-पुर्जे चीन और अन्य देशों से आते है।

एपल में भी 'चीनी'

एपल अपने अधिकांश आईफ़ोन का निर्माण दक्षिणी चीन के शेनज़ेन शहर में करता है। सस्ते श्रम और कम लागत की वजह से एपल के ज्यादातर फोन चीन में बनते हैं। हालांकि पिछले कुछ समय में चीन के साथ अमेरिका के रिश्ते और कोरोना का असर इसके कारोबार पर भी पड़ा है। एपल भारत में स्मार्टफोन की मैन्युफैक्चरिंग और असेंबलिंग करता है। हालांकि यह बहुत छोटे पैमाने पर किया जाता है। कोरोना महामारी के बाद से एपल चीन से अपने प्रॉडक्शन प्लांट को भारत में शिफ्ट करने की बात कर रहा है। इसके इंडिया आने की बात जोर-शोर से हो रही है। फिलहाल तो भारतीय बाजार में अधिकांशतः चीन के बने एपल फोन ही बिक रहे हैं।

मुश्किलों से दो दो हाथ

कोरोना के साथ लगातार हो रही जंग के दौरान प्रधानमंत्री ने देश की जनता से आत्मनिर्भर बनने की बात कही है। परिस्थितयों के आगे लाचार भारत में अभी भी कुछ लोग ऐसे है जो आत्मनिर्भरता के दम पर अपना और अपने परिवार का पेट पाल रहे है।

ये कहानी है वाराणसी के सारनाथ के इलाके हिरामनपुर गांव के निवासी जितेंद्र वर्मा की, जो 17 सालों से खड़े नहीं हो। बिस्तर पर लेटे लेटे ही अपना और अपने परिवार का खर्च चला रहे है। जितेंद्र वर्मा बिस्तर पर लेटे लेटे सिलाई मशीन से कपडे सिलने का काम करते है।

17 साल पहले छत से गिरने के कारण उन्हें स्पाइन इंजरी हुयी जिसके बाद वो आज तक खड़े नहीं हो पाए। डाक्टरों ने भी कहा कि वो अब खड़े नहीं हो पाएंगे। हॉस्पिटल से घर आने के बाद उन्होंने अपनी जिंदगी को नई दिशा की ओर मोड़ा और हिम्मत का परिचय देते हुए अपना काम फिर से शुरू किया।

इस बार अंतर बस इतना था कि पैरों से सिलाई मशीन का काम करने वाले जितेंद्र ने हाथों का सहारा लिया और बिस्तर पर लेटे लेटे ही सिलाई शुरू कर दी। विषम परिस्थितियों में भी आत्मनिर्भर होने बनने वाले जितेंद्र की कहानी उन लोगों के लिए एक मिशाल है, जो परेशानियों से डरकर गलत कदम उठा लिया करते है।

जितेंद्र के घर वालों का कहना है कि जब उनके साथ दुर्घटना हुयी तो किसी को भी ये उम्मीद नहीं थी कि वो इस कदर अपने अवसाद से उभरकर मिशाल पेश करेंगे।

जिंदगी के साथ हो रही लड़ाई में जितेंद्र का सबसे बड़ा सहारा उनकी पत्नी ज्योति वर्मा बनी जिन्होंने अपनी आप बीती बताते हुए कहा कि शुरुवाती दिनों में उन्हें आहूत पेरशानी झेलनी पड़ी। **शेष पेज न. 46 पर**

लॉक डाउन से नहीं उभर पा रही बनारस की पहचान

वैश्विक महामारी कोरोना के चलते लगे देशव्यापी लॉक डाउन ने सभी प्रकार के व्यवसाय को प्रभावित किया है। ऐसे में वाराणसी की पहचान बनारसी साड़ी को मूर्त रूप देने वाले बुनकर बदहाली के आंसू रो रहे है।

पूरे वाराणसी में बनारसी साड़ी को पहचान देने वाले बुनकरों की संख्या लगभग 5 लाख के करीब है। ये बुनकर लॉक डाउन से पूरी तरह से टूट गए है और अब जीवन यापन के लिए सब्जियां बेचने को मजबूर है।

जो गलियों हमेशा पावरलूम की मशीनों से गुलजार हुआ करती थी वहां अब सन्नाटा पसरा हुआ है। लॉक डाउन की समस्या ने बुनकरों को इस कदर परेशान कर दिया है कि अब वह बुनकरी को छोड़ सब्जियां बेचने को मजबूर है।

पैसों की तंगी ने इन बुनकरों को इतना मजबूर कर दिया है कि ये बुनकर घरों के गहने बेच रहे है। कुछ बुनकर तो कबाड़ में अपनी बुनकरी की मशीनों तक बेंचकर अपने घर का खर्च चला रहे है।

कुछ बुनकरों ने अपनी समस्या बताते हुए कहा कि एक तो रोजगार ठप पड़ा हुआ है और बीतें रमजान में घर में राशन और अन्य चीजों की पूर्ति के लिए गहने तक बेचने पड़े।

बुनकरों ने बताया है कि लॉक डाउन के शुरुवाती दौर में पार्षद के द्वारा राशन तो मिला मगर लंबे समय तक पैसों की तंगी ने अब उन्हें सब्जी बेचने को मजबूर कर दिया है।

उन्होंने बताया कि शुरू में तो सब्जी बेचने में शर्म महसूस हुयी मगर भूखे पेट ने उस शर्म को मार दिया और अपना और अपने घर वालों के भरण पोषण के लिए कुछ ठेले से और कुछ छोटी छोटी दुकानें लगाकर सब्जी बेंच रहे है।

पैसों की तंगी से परेशान कुछ लोग सब्जियों के अलावा टॉफी, बिस्किट जैसी चीजें बेच रहे है।

चरणबद्ध तरीके से अटैक करता है कोरोनावायरस

कोरोना जैसे खतरनाक वायरस के मानव शरीर में प्रवेश और प्रभावित करने को लेकर दुनिया भर के वैज्ञानिक शोध कर रहे है।

लगातार हो रही रिसर्च से वैज्ञानिक ये पता लगाने की कोशिश कर रहे है कि आखिर ये वायरस मानव शरीर को कैसे नुकसान पहुंचाता है। इटली में रिसर्च के बाद वैज्ञानिकों ने यह दावा किया है कि किसी भी मनुष्य के कोरोना पॉजिटिव होने के बाद इस वायरस का असर तीन चरणों में दिखायी देता है।

रिसर्च में ये बात सामने आयी कि यह वायरस हर चरण में अपने लक्षण बदलता है।

इटली के फ्लोरेंस यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं के अनुसार कोरोना पॉजिटिव मनुष्य के शरीर में यह वायरस अलग अलग चरणों में अलग अलग लक्षण के साथ प्रभावकारी होता है।

शोधकर्ताओं ने दुनियाभर चिकित्सकों को हर चरण के अनुसार ही इलाज करने की जरूरत बताई है।

फिजियोलॉजी रिव्यू जर्नल में प्रकाशित शोध में ये बताया गया कि कोरोना अपने हर चरण में शरीर की अंदरूनी प्रक्रियाओं का संबंध बदलता है। शुरुवाती दौर या चरण में कोरोना के हल्के लक्षण फ्लू जैसे होते है।

इस स्टेज में कोरोना मानव शरीर में अपनी संख्या को बढ़ता है। कोरोना के दूसरे चरण को पल्मोनरी स्टेज कहा जाता है।

इस स्टेज में यह वाइरस मानव के रोग प्रतिरोधक क्षमता पर असर दिखाता है। इसमें सांस से जुडी शिकायत जैसे खांसी, सांस लेने में तकलीफ और शरीर में ऑक्सीजन के स्तर की कमी होने की शिकायत होने लगती है।

वैसे कुछ मामलों में खून के थक्के बनने शुरू हो जाते है। आपको बता दें कि किसी भी स्टेज में खून के थक्के जमना खतरनाक साबित हो सकता है। कोरोना के तीसरे चरण को हायर इन्फ्लामेट्री कहते है। इस स्टेज में मानव शरीर में रोग से लड़ने की क्षमता या ये कहे कि मनुष्य की इम्यून सिस्टम ही दिल, किडनी और अन्य अंगो को बेकार करने लगता है।

इस स्थिति को साइटोकाइन स्टॉर्म कहते है। इस स्थिति में मानव के शरीर खुद की कोशिकायें को नुकसान पहुंचाने लगता है।

बारिश के मौसम में बढ़ सकता है कोरोना का कहर, जानिए विशेषज्ञों की राय

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कोरोना महामारी को लेकर ये जानकारी दी थी कि इस खतरनाक वायरस का फैलाव मानव से मानव में होता है। इसीबीच एक चौका देने वाले तथ्य सामने आये जिनपर गौर करना आवश्यक है।

इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ़ गांधीनगर में अहमदाबाद के कई जगहों के सीवेज वाटर के सैम्पल लिए गए जिनमें सार्स-कोव-2 के जींस मिलें है। ऐसे तथ्यों को लेकर पूरे विश्व में बहस छिड़ी हुयी है।

चिकित्सा वैज्ञानिकों का कहना है कि एक

इन सभी तथ्यों के सामने आने से पहले विश्व स्वास्थ्य संगठन ने बताया था कि कोरोना वायरस पानी से नहीं फैलता है।

आपको बता दें कि नीदरलैंड के वैज्ञानिकों की एक जानकारी जो ऑनलाइन जर्नल केडब्ल्यूआर के एक अंक में छपी थी

कोरोना के संकट के बीच विशेषज्ञों ने पानी में भी कुछ समय के लिए कोरोना के वायरस के सक्रीय रहने की बात कही है।

वैज्ञानिकों के मुताबिक बारिश के पानी की आद्रता कोरोना वायरस के होने वाले ग्रोथ को बढ़ा सकता है। भारत के अहमदाबाद के साथ दुनिया के कई देशों में पानी में वायरस की मौजूदगी ने विशेषज्ञों की चिंता को बढ़ा दिया है।

ही फैमिली के बैक्टीरिया या वायरस के फैलने का तरीका एक जैसा ही होता है।

ऐसे तथ्यों को लेकर आईआईटी के अध्ययनकर्ताओं ने देश के सभी हॉट स्पॉट इलाकों के सीवेज के पानी की जांच की बात की है। इस जांच से यह पता लगाया जा सकता है कि कहीं पानी में कोरोना के वायरस की उपस्थिति तो नहीं है।

जिसमें यह दावा किया गया कि वहां के वाटर ट्रीटमेंट प्लांट में कोरोना के 3 सक्रीय जींस मिलें।

इसीप्रकार का एक दावा यूके के सेंटर फॉर ईकोलॉजी एंड हाइड्रोलॉजी की रिपोर्ट में किया गया कि कोरोना वायरस मल या गंदे पानी में कुछ वक्त के लिए सक्रीय रहता है।

हेल्थ वर्कर को सैलरी न देना अब कानूनी अपराध : सुप्रीम कोर्ट

देशभर में कोरोना के मरीजों की संख्या लगातार बढ़ती ही जा रही है ऐसे में इन मरीजों के इलाज में लगे हेल्थ वर्कर की अहम भूमिका सामने आयी है। अपने घर परिवार को छोड़ दिन रात मरीजों की देखभाल करने केसाथ साथ कई हेल्थ वर्कर खुद इस महामारी की चपेट में आ चुके है।

ऐसे में इन हेल्थ वर्करों को समय से वेतन नहीं मिलने की शिकायत कई जगहों से आ रही है। इस मामले पर सुप्रीम कोर्ट ने संज्ञान लेते हुए बड़ा फैसला सुनाया है। सुप्रीम कोर्ट के मुताबिक देश में अब हेल्थ वर्कर को वेतन न देना कानूनी अपराध माना जायेगा।

सुप्रीम कोर्ट ने एक जनहित याचिका की सुनवाई के दौरान ये फैसला दिया। दरअसल कई सरकारी अस्पतालों में डॉक्टर और नर्सों को कई महीने से वेतन न मिलने पर जनहित याचिका दायर की गयी थी जिसपर सुनवाई के दौरान करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने हेल्थ वर्करों के हित में फैसला दिया।

सुप्रीम कोर्ट में एक जनहित याचिका की सुनवाई के दौरान बताया गया कि कई सरकारी अस्पतालों में डॉक्टर और नर्सों को कई महीने से सैलरी नहीं दी गई है, फिर भी वो कोरोना के काम में लगे हुए हैं। साथ ही इन हेल्थ वर्कर को कोरोना से जुड़ी कई तरह की सुविधाएं नहीं दी जा रही हैं, जिससे उनकी परेशानी बढ़ गई है। मामले की गंभीरता को देखते हुए सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र सरकार से कहा कि देशभर में डॉक्टरों और नर्सों को जल्द बकाया सैलरी दी जाए। साथ ही अस्पताल के पास ही उनके लिए क्वारंटाइन की सुविधा दी जाए।

केंद्र सरकार की तरफ से सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने कहा कि सरकार अपनी तरफ से बेहतर करने की कोशिश कर रही है, लेकिन कई चीजें राज्यों के अधीन है। इसलिए सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र सरकार को आदेश दिया कि इस बाबत सभी राज्यों को आदेश जारी किया जाए।

बॉलीवुड इंडस्ट्री के लिए 2020 काफी खराब साल

बॉलीवुड इंडस्ट्री के लिए तो साल 2020 काफी खराब साल साबित होता जा रहा। एक तरफ तो दुनिया कोरोना महामारी से लड़ रही तो वही एक तरफ बॉलीवुड की कई हतियों की एक के बाद एक मृत्यु होती जा रही वे सभी बॉलीवुड को अपनी यादों के सहारे छोड़ गए। बॉलीवुड इंडस्ट्री में काफी दुःख के बदल छाए हुए हैं अभी एक सेलिब्रिटी के जाने का गम इंडस्ट्री भूल ही नहीं पा रही तब से दूसरी बुरी खबर सामने आ जा रही है।

इस साल कई बड़ी हस्तियों की मृत्यु हो चुकी है जैसे अभिनेत्री निम्मी, इरफ़ान खान, ऋषि कपूर, वाजिद खान, और अब शुशांत सिंह राजपूत।

वही इरफ़ान खान के बारे में बात करें तो सभी जानते है की काफी लम्बे समय से वो कैंसर से पीड़ित थे और वो इस साल रिलीज़ हुई फिल्म का प्रमोशन भी अपनी खराब सेहत की वजह से नहीं कर पाए थे और कैंसर जैसी बिमारी के सामने 29 अप्रैल को हार गए और इस दुनिया को अलविदा कह दिया। इरफ़ान खान अपने करियर की बुलंदियों पर थे और उन्होने द वारियर, मकबूल, हासिल, द नेमसेक, रोग जैसी फिल्मों मे अपने अभिनय का लोहा मनवाया। इरफ़ान ने अभिनय के लिए कई पुरस्कार भी जीते है इरफान हॉलीवुड मे भी एक जाना पहचाना नाम हैं। 2011 में उन्हें भारत सरकार द्वारा पद्मश्री से सम्मानित किया।

इरफ़ान खान-अभिनेता

ऋषि कपूर-अभिनेता

कुछ ऐसा ही ऋषि कपूर के साथ भी था ऋषि कपूर भी कैंसर जैसी बिमारी से जूझ रहे थे हालांकि 2 साल पहले साल 2018 में ये पता चला था की ऋषि कपूर ल्यूकेमिया नाम के कैंसर की बीमारी है और वे इसके इलाज के लिए यूएस भी गए थे जहां उन्होंने अपना इलाज कराया और ठीक हो के भारत लौटे थे। मगर इस साल 30 अप्रैल को उनकी मृत्यु हो गयी। ऋषि कपूर एक बेहतरीन कलाकार थे उन्होंने कई यादगार फिल्मों में काम किया है। अपने ज़माने के बेहतरीन एक्टरों में से एक थे ऋषि कपूर जिनकी पिक्चरों को खूब पसंद किया जाता था। बॉबी फ़िल्म के लिए 1974 में सर्वश्रेष्ठ अभिनेता के लिए फ़िल्मफ़ेयर पुरस्कार और साथ ही 2008 में फ़िल्मफेयर लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार सहित अन्य पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चूका है। उनकी पहली फ़िल्म मेरा नाम जोकर में बाल कलाकार के रूप में शानदार भूमिका के लिए 1970 में राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार प्राप्त किया। उन्होंने 1973 से 2000 के बीच 92 फिल्मों में रोमांटिक लीड के रूप में प्रमुख भूमिकाएँ निभाईं। दो दूनी चार में उनके प्रदर्शन के लिए, उन्हें 2011 का सर्वश्रेष्ठ अभिनेता के लिए फिल्मफेयर क्रिटिक्स पुरस्कार दिया गया और कपूर एण्ड सन्स में अपनी भूमिका के लिए, उन्होंने 2017 का सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेता के लिए फिल्मफेयर पुरस्कार जीता। उन्हें 2008 में फिल्मफेयर लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड से भी सम्मानित किया गया था।

वाजिद खान–म्यूजिक कंपोजर

निम्मी–अभिनेत्री

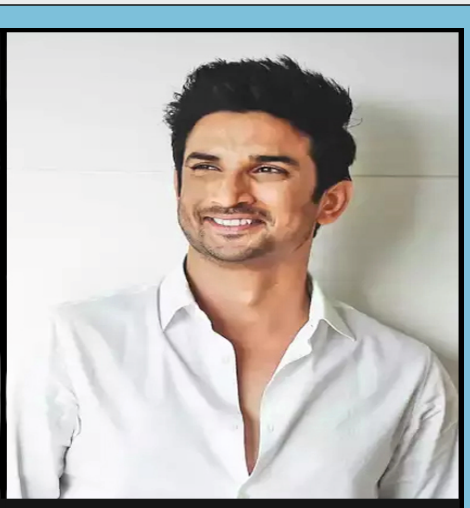

शुशांत सिंह राजपूत–अभिनेता

बॉलिवुड की साजिद–वाजिद की एक हिट म्यूजिक जोड़ी साल 2020 में बिखर चुकी है। वाजिद ने इस दुनिया को हमेशा के लिए अलविदा कह दिया है। इतनी कम उम्र में उनके दुनिया छोड़ जाने की वजह से सभी शोक में हैं। बॉलिवुड के लिए यह खबर काफी शॉकिंग थी, क्योंकि अचानक निधन के खबर ने सबको झकझोर कर रख दिया है। वैसे तो वाजिद लम्बे समय से किडनी और हार्ट की समस्या से जूझ रहे थे, लेकिन साथ ही यह भी कहा जा रहा है कि किडनी के इलाज के दौरान जब उनका कोरोना टेस्ट किया गया तो यह रिपोर्ट पॉजिटिव आयी। बताया गया कि वह पिछले एक हफ्ते से कोरोना पॉजिटिव थे। हालांकि, उनके मौत की जो वजह बताई जा रही है वह हार्ट अटैक है। आपको बता दें की उनकी तबीयत 31 मई की दोपहर अचानक खराब हो गई और उन्हें किडनी की तकलीफ के बाद हॉस्पिटलाइज किया गया था। हालांकि, यहां यह वे किडनी के इलाज के लिए पहले भी कई बार अस्पताल में एडमिड हो चुके थे। जब वाजिद खान की हालत ज्यादा खराब हुई तब उनके वेंटिलेटर पर होने की खबरें आईं। वाजिद के निधन से पूरा बॉलिवुड हैरान और शोक में चला गया। वाजिद खान ने सलमान खान की फिल्म 'दबंग', 'वांटड', 'वीर', 'नो प्रॉब्लम', 'गॉड तुस्सी ग्रेट हो', 'पार्टनर' सहित कई और फिल्मों में भी गाना गाया है। साजिद–वाजिद की जोड़ी ने 'एक था टाइगर', 'दबंग', 'दबंग2', 'दबंग 3', 'पार्टनर', 'सन ऑफ सरदार', 'राउड़ी राठौर', 'हाउसफुल 2' जैसी तमाम बेहतरीन फिल्मों को संगीत से सजाया था।

अभिनेत्री निम्मी 1950 और 1960 की बेहतरीन अभिनेत्रियों में से थी उन्होंने अपने दौर में कई हिट फिल्मे दी है। इनकी मृत्यु 25 मार्च को मुंबई में हुई थी।

इसी साल एक और दुखद घटना घटी जिससे सारा बॉलीवुड फिर से शोख में दुब गया बॉलीवुड का नामचीन सितारा शुशांत सिंह राजपूत ने 14 जून को सुबह मुंबई में बांद्रा स्थित अपने निवास पर फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। सुशांत सिंह राजपूत एक बेहतरीन अभिनेता, थियेटर आर्टिस्ट और डांसर थे। सुशांत बॉलीवुड के बेहद लोकप्रिय एक्टर थे। उन्होंने कुछ लोकप्रिय फिल्में में किरदार निभाया जिसके जरिए वह हमेशा याद रहेंगे। शुशांत ने कई बेहतरीन फ़िल्में की है 'काय पो छे' उनकी पहली फिल्म थी उन्होंने 'छिछोरे, एम् एस धोनी, राब्ता, केदारनाथ जैसी कई फिल्मे की और काफी कम समय में बॉलीवुड में अपनी एक पहचान हांसिल कर ली। शुशांत में अपने जीवन में नाम और शोहरत खूब कमाई। मात्र 34 की उम्र में उन्होंने एक बोहोत ही बड़ा कदम उठा लिया जिसकी वजह से पूरी फ़िल्म इंडस्ट्री को ज़बरदस्त झटका लगा है और इस सदमे से इंडस्ट्री उभर नहीं पा रही है। बताया जा रहा की शुशांत लम्बे समय से डिप्रेशन की बीमारी से ग्रसित थे। मगर उनके परिवार वालो का कहना है की वो ऐसा नहीं कर सकते परिवार वालों ने सीबीआई जांच की मांग भी की है। मुंबई पुलिस ने भी अब कहा की जो भी कुछ बताना चाहता है वो मुंबई पुलिस को आ कर बता सकता है उसका नाम भी नहीं लिया जाएगा जिसे जो बयान देना है आ कर दे सकता है। वहीँ बॉलीवुड में शुशांत की मौत के बाद एक अलग ही युद्ध छिड़ गया है परिवार वाद का। आपको बता दें की सोशल मीडिया पर सभी अपनी अपनी राये लिख रहे है मगर सच्चाई क्या है ये तो सिर्फ सुशांत ही जानते थे और वो साड़ी सच्चाई उनके साथ ही चली गयी।

वायरस को अनुबंधित करने से पहले हमने जिस जीवन शैली का पालन किया, वह हमें गंभीर जटिलताओं के बिना उस पर ज्वार करने में सक्षम बनाता है।

आघात आपको सीओवीआईडी -19 जानने में है, और दिनों के लिए अस्पताल में भर्ती होने में निहित है। अस्पताल में, मेरा खून गाढ़ा होने लगा, जैसा कि इस संक्रमण में संभव है। मेरा शरीर, मेरी कमर से पैर की उंगलियों तक सही होगा। डॉक्टरों ने इसे रक्त गाढ़ा होना जल्दी पकड़ लिया और इसका इलाज किया। घर पर, मुझे लहसुन होता रहा है, जो एक प्राकृतिक रक्त पतला है। यह मदद करता है, और जो कोई भी घर पर मौजूद है वह इसे आज़मा सकता है।

वह लक्षण जिसने मुझे सबसे अधिक प्रभावित किया, और लंबे समय तक मेरे साथ रहा, वह था गंध और स्वाद का नुकसान। चूंकि भोजन कुछ ऐसा है जिसे हर कोई लॉकडाउन में देख रहा है, इसलिए मैं इसे याद कर रहा था।

मानसिक लड़ाई-

प्रवासी श्रमिक संकट में हैं। मैंने सीखा कि मेरे घर के लिए यह कितना कठिन था, इस अवधि के माध्यम से प्राप्त करने में मदद करता है। सकारात्मक बने रहना, और दूसरों के लिए अच्छा करना, हमारी मदद करता है।

इसके अलावा, मैं विपश्यना में विश्वास करता हूं। यह देहरादून में [कि हम रह रहे हैं] में भी मदद करता है, जहां खुली जगह है। जबकि हम वर्तमान में सीमित हैं क्योंकि हम अभी भी
संगरोध में हैं, मैं फिर से नृत्य शुरू करने के लिए उत्सुक हूं।

'प्रशिक्षण शुरू करने के एक महीने के बाद, मैं सामान्य महसूस करता हूं'

ज़ोआ मोरानी -

सात साल पहले, मैंने अष्टांग योग सीखना शुरू किया। मैं पीसीओडी के लिए दवा पर था और मानसिक रूप से बहुत कुछ कर रहा था। मैं शारीरिक रूप से भी फिट नहीं था। मेरे अभ्यास से मुझे मदद मिली।

मैं सुबह ५.३० बजे उठता हूं, ६.० से ९ ० मिनट की क्लास के लिए ६.३० बजे। हालांकि मेरी जरूरतों को पूरा करने के लिए व्यक्तिगत, यह ज़ोरदार था। उस के कारण, मेरे खाने की आदतों में सुधार हुआ। मैं भी शाकाहारी हो गया।

मुझे याद नहीं है कि यह बीमारी [संक्रमण] से पहले हो। मेरे पिता और बहन में कोई लक्षण नहीं थे, लेकिन मैं गंभीर था। मेरे पास साँस लेने के मुद्दे थे, और इस प्रकार, मुझे लगता है कि मेरा अभ्यास भेस में आशीर्वाद था।

मैंने अपने शरीर और दिमाग पर इतना काम किया है कि मैं इससे निपटने के लिए तैयार था। जब मैं संक्रमित था तब शारीरिक व्यायाम नहीं कर सकता था, मैंने अस्पताल में रहने के दौरान सुबह और शाम 30 मिनट के लिए प्राणायाम का अभ्यास किया। इसमें अनुलोम विलोम शामिल होगा। मुझे लगता है, मेरा अभ्यास, साथ चलता है और तैरता है कि मैं ले जाऊंगा, मेरे लिए काम किया।

मानसिक लड़ाई-

जब मैं अस्पताल में था, मैंने कोरोनावायरस के बारे में पढ़ना बंद करने का फैसला किया, ताकि अपने मानसिक स्वास्थ्य की रक्षा कर सकूं। इसके अलावा, जब मैं पिछले छह वर्षों में कुंवारा हो गया था, इस अनुभव के दौरान, मुझे सामाजिक संबंध बनाने का मन हुआ। मैं फोन पर समय बिताता, दोस्तों के साथ पकड़ता। अगर मुझे कम लगा, तो मैं जाप करूंगा।

दिनचर्या में लौटते हुए तुलसी, पोदीना, अद्रक और इलाइची युक्त एक कड़ा है जो मुझे छाती की भीड़ से निपटने में मदद करेगा। अस्पताल से लौटने के बाद भी, मैं अस्वस्थ था, इसलिए, मुझे 14 दिनों के लिए नहीं बताया गया था।

जब मैं पहली बार योग मैट पर लौटा, तो मुझे लगा कि मेरे शरीर ने एक हिट लिया है। योग को फिर से शुरू करने में एक महीने से अधिक समय हो गया है, और अब केवल मुझे लगता है कि मैं वापस सामान्य हो रहा हूं। यह देखते हुए क मैं परिवार में सबसे योग्य हूं, मुझे विश्वास था कि मुझे COVID-19 नहीं मिलेगी। फिर भी, मैं भाग्यशाली महसूस करता हूं

इंजीनियरिंग और यूपीएससी दोनों साथ किये पास, पहले ही प्रयास में सफल होने वाली सृष्टि हैं खास

मध्यप्रदेश के भोपाल की रहने वाली सृष्टि जयंत देशमुख की शुरुआती शिक्षा-दीक्षा भोपाल हुई है। सृष्टि बाकी बच्चों की तुलना में अलग थीं उन्होंने बचपन में ही अपना लक्ष्य तय कर लिया था कि उन्हें बड़े होकर आईएएस ऑफिसर बनना है। बचपन में जब बच्चे खेल-कूद में मन लगाते हैं तब सृष्टि आईएएस बनाने में अपना मन लगा चुकी थीं। जब उन्होंने ये तय किया तब उनको इतनी भी समझ नहीं थी कि इस सपने को पूरा करने के लिये किस स्तर की मेहनत करनी पड़ सकती है और किस लेवल के कांपटीशन को बीट करना पड़ सकता है। कमाल की बात तो यह है कि जब सृष्टि बड़ी हुई और उन्हें समझ आने के बाद भी कभी उन्होंने ये नहीं सोचा और ना ही उन्होंने कभी अपने दिमाग में यह लाया कि यह बहुत कठिन परीक्षा है, इसमें लाखों लोग बैठते हैं। उन्होंने हमेशा सकारात्मक सोच के साथ बस अपने दिल की सुनी और पूरी ईमानदारी से प्रयास किया और अपनी कोशिश और लगन से सफता प्राप्त की।

निगेटिव लोगों से रहें दूर –

अपने बारे में बात करते हुये सृष्टि ने बताया कि आप किन लोगों से घिरे रहते हैं यह आपके मोटिवेशन और तैयारी पर बड़ा असर डालते हैं। उन्होंने काफी साफ शब्दों में कहा कि निगिटेव लोगों से सिर्फ दूर ही न हों बल्कि उन्हें अपने जीवन से ही हटा दें क्युकी ये लोग एनर्जी सकर्स होते हैं जो आपको कदम-कदम पर आपके लक्ष्य को हासिल करने में रोकेंगे। ऐसे लोग हमेशा आपको कहेंगे कि यह आपसे नहीं होगा। ऐसी बातों का दिमाग पर कई बार गहरा असर होता है और इंसान सोचने पर मजबूर हो जाता की वो अपना लक्ष्य हासिल कर पायेगा या नहीं और इसका सीधा प्रभाव आपकी सफलता पर पड़ता है क्योंकि एक बार जब दिल मान लेता कि यह आपसे नहीं होगा तो कितनी भी मेहनत कर लो सच में आपसे नहीं होगा।

इंजीनियरिंग के साथ की तैयारी –

इंजीनियरिंग के तीसरे साल में एक दिन सृष्टि को यह ख्याल आया कि वे इंजीनियर बनकर एक सिंपल नौकरी कर के अपना पूरा जीवन नहीं बिता सकती। बचपन का उनका वो सपना जो जिंदगी की भागदौड़ में कहीं खो गया था अब उस पर वापस आने का वक्त आ चुका था। सृष्टि को जब ये समझ आया तो उन्होंने कुछ भी नहीं सोचा वे तुरंत यूपीएससी की तैयारी में जुट गयीं। इस सफलता के लिए वे अपने परिवार के सहयोग का जिक्र करना भी नहीं भूली। उन्होंने बताया कि उनके घर से उन्हें बहुत मदद मिली। सृष्टि की मां जो एक टीचर हैं उन्होंने ने भी कभी नहीं पूछा कि क्या कर रही हो, क्यों कर रही हो या कैसे होगा, उनकी माँ ने केवल उनका साथ दिया। सृष्टि के पिता पेशे से इंजीनियर थे उन्होंने भी सृष्टि को हमेशा एक हेल्दी एनवायरमेंट देने की कोशिश की। सृष्टि ने बताया की उनका एक छोटा भाई भी है जो हमेशा उनके हल्के-फुल्के पलों में शामिल रहा है। इस प्रकार सृष्टि ने अपने ऊपर अटूट विश्वास के साथ दिन-रात एक करके तैयारी करनी शुरू कर दी।

दो नावों पर की सवारी –

सृष्टि का फोकस हमेशा से यूपीएससी की परीक्षा की ओरही था। वे अपना ज्यादा से ज्यादा समय और एनर्जी इसी की तैयारी में लगाती थी। जब इंजीनियरिंग के सेमेस्टर एग्जाम पास आ जाते थे तब वे एक से डेढ़ महीने इंजीनियरिंग की पढ़ाई करने लगती थी। काबिले-तारीफ बात यह है कि जहां कुछ कैंडिडेट एक बार में एक भी परीक्षा पास नहीं कर पाते, वहीं सृष्टि एक साथ दो नावों की सवारी की ओर उन्होंने इतना अच्छा बैलेंस बनाया की दो नावों में पैर रखने के बावजूद सृष्टि डूबी नहीं बल्कि उन्होंने ऐसा कारनामा कर दिखाया जो लाखों लोगों का सपना होता है। यूपीएससी जैसी कठिन परीक्षा के बीच-बीच में इंजीनियरिंग को भी समय देना कितना कठिन होगा लेकिन उनकी डेडिकेशन, अनुशासन और हार्डवर्क उनकी मंजिल तक पहुँचाने में मदद कर ही दी।

सोशल मीडिया से दूरी और योग से नजदीकी काम आयी –

सृष्टि का कहना हैं कि मेहतन सभी करते हैं लेकिन कैंडिडेट का मेंटल लेवल पर फर्क पड़ता है कि वो क्या कर सकता और कितना कर सकता। जिसका दिमाग जितना शांत और सही दिशा में काम करता है उसे उतना ही फायदा मिलता है। अपनी एनर्जी को सही दिशा में खर्च करना आवश्यक होता है। एक साथ दो अलग अलग विषयों की पढ़ाई करते समय सृष्टि को योगा और मेडिटेशन ने बैलेंस बनाने में काफी मदद की। फिजिकल और मेंटल फिटनेस को सफलता के लिये सृष्टि बहुत आवश्यक मानती हैं। इसके अलावा वे दो टिप्स देती हैं-सिविल सर्विसेस की तैयारी में कंसिसटेंसी और फेथ बहुत जरूरी है। ऐसा न करें कि एक दिन सात-आठ घंटे पढ़ लिया फिर अगले दिन दो घंटे पढ़ाई कि या फिर स्किप कर दिया। अपनी क्षमता के अनुसार आप एक टाइम फिक्स करें और उतने घंटे रोज़ पढ़ें, इसी कंसिसटेंसी की जरूरत होती है

2- दूसरी अहम बात यह है कि कोई कुछ भी कहे अपने ऊपर विश्वास हमेशा बनाये रखें।

सृष्टि ने खुद का ध्यान ना भटके उससे बचने के लिये तैयारी की शुरुआत करने से पहले ही अपने सारे सोशल मीडिया एकाउंट्स डिलीट कर दिये थे। खुद को डिस्ट्रैक्ट होने से बचाने के लिये सृष्टि ने ऑनलाइन स्टडी मैटीरियल का अत्यधिक उपयोग किया।

लाखों से नहीं है कांपटीशन –

सृष्टि का कहना हैं कि इस परीक्षा की तैयारी करते समय दो बातों को हमेशा ध्यान में रखें। पहला यह कि कैंडिडेट्स को अक्सर लगता है कि कांपटीशन तगड़ा है क्युकी लाखों स्टूडेंट्स इस परीक्षा में बैठते हैं तो, एक बात जान लीजिये कि जो लाखों स्टूडेंट्स परीक्षा में बैठते हैं, वे सभी परीक्षा को लेकर गंभीर नहीं होते उनमे कई तो ऐसे होते है कि बस गिनती बढ़ने आ जाते है। जितने भी कैंडिडेट्स गंभीरता से परीक्षा दे रहे हैं, केवल उन्हीं से आपका कांपटीशन होता है तो सबसे पहले आंकड़ों से डरना बंद कर दें। दूसरी बात यह ध्यान रखें कि अपने मन को यह समझा दें कि मेरा पहला अटेम्पट ही आखिरी अटेम्प्ट है इसके बाद आगे मौका नहीं मिलेगा। कभी भी परीक्षा के स्तर को देखने या परीक्षा को समझने के लिहाज से एग्जाम में न बैठें। तैयारी ऐसे करें और परीक्षा दें जैसे बस यही पहला और आखिरी मौका है आपके लिए, बस इसी में सफलता हासिल करनी है। हाँ आप ये जरूर कर सकते हैं कि तैयारी में लम्बा या अच्छा समय दें और जब आप खुद संतुष्ट हों अपनी तैयारियों से तभी परीक्षा देने जायें। सृष्टि ने साल 2018 में इंजीनियरिंग पास की और ऑल इंडिया रैंक 05 के साथ ही यूपीएससी परीक्षा भी पास की। यूपीएससी परीक्षा में उन्होंने महिलाओं में टॉप किया था। सृष्टि का सफर यह बताता है कि शांत मन और डर को दूर भगाकर अगर पूरी एकाग्रता से कोशिश की जाये तो सफलता हासिल की जा सकती है और आपकी मंजिल को पाने से कोई रोक नहीं सकता है।

अगर आप भी ऐसी ही किसी परीक्षा की तईयारी कर रहे है या करना चाहते हैं तो आप सृष्टि की कहानी से प्रेरणा ले सकते है और अपने मन को शांत कर के एक बार सोच ले और असमंजस में न फसे बस यही डिसाइड करे की मुझे ये करना है और एक संकल्प ले की बस कुछ भी हो मुझे ये हांसिल करना है। जब आप अपने मन को एकाग्र करने में सफल हो जाएंगे तो आप कुछ भी कर पाएंगे।

यूपी बोर्ड परीक्षा में उत्तीर्ण छात्रों को मिलेगी डिजिटल मार्कशीट

उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद की ओर से लंबे इंतजार के बाद 10वीं और 12वीं के नतीजे जारी किये गए। इन नतीजों को ऑफिशियल वेबसाइट पर जारी किया गया है। इस साल 10वीं की परीक्षा में 83.31 फीसदी और 12वीं में 74.63 प्रतिशत छात्र सफल घोषित हुए। उत्तर प्रदेश के उप-मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने प्रेस कॉन्फ्रेंस के माध्यम से मार्कशीट उपल कराए जाने की जानकारी दी है। केशव प्रसाद मौर्य ने बताया कि बोर्ड पहली बार डिजिटल प्रमाणपत्र और अंक पत्र जारी कर रहा है। 1 जुलाई से स्टूडेंट्स अपना डिजिटल मार्कशीट प्राप्त कर सकते हैं।

अगर टॉपर्स की बात करें तो 10वीं में रिया जैन और 12वीं में अनुराग मलिक ने टॉप किया है। दसवीं में रिया जैन ने 96.67 % और 12वीं में अनुराग मलिक ने 97 % अंक किए हासिल किए। यह पहली बार नहीं है कि यूपी बोर्ड परीक्षा में लड़कियों ने बाजी मारी। इसके पहले साल 2019 में लड़कियों ने लड़कों की अपेक्षा ज्यादा अधिक अंक प्राप्त किया था। वहीं बता दें कि रिजल्ट जारी होने के साथ-साथ टॉपर्स की लिस्ट भी सामने आ गई है।

रिजल्ट घोषित होते ही शुरू हुए आवेदन

यूपी बोर्ड का इंटरमीडिएट का रिजल्ट 27 जून को जारी होने के बाद इलाहाबाद विश्वविद्यालय में प्रवेश के लिए आवेदन करने वाले छात्रों की संख्या लगातार बढ़ रही है। 28 जून से अब तक नियमित 3 हजार से ज्यादा अभ्यर्थी आवेदन कर रहे हैं जबकि ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन डेढ लाख से अधिक ने किया था। 27 जून तक फीस जमाकर 70 हजार अभ्यर्थियों ने ही फार्म सबमिट किया था वहीं बुधवार शाम तक 1,64,1144 ने ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन किया है। इसमें 81,489 ने अंतिम रुप से फार्म सबमिट कर दिया है।

27 जून को 71,290 ने फार्म भरा था। यानी बोर्ड परीक्षा का रिजल्ट आने के तीन दिन बाद तक दस हजार से ज्यादा आवेदकों ने फार्म भरा। आवेदन की अंतिम तिथि 30 जून से बढ़ाकर 15 जुलाई तक कर दी गई है। उम्मीद है कि इस साल भी पिछले साल के बराबर छात्र-छात्राएं प्रवेश परीक्षा के लिए आवेदन करेंगे। इविवि एवं कॉलेजों में नए शैक्षिक सत्र में दाखिले के लिए प्रवेश परीक्षाएं एक अगस्त से प्रस्तावित हैं।

इस जिले के 2601 स्कूलों के परिणाम रहे शत प्रतिशत -

यूपी बोर्ड की हाईस्कूल और इंटरमीडिएट परीक्षा में प्रदेशभर के 2601 स्कूलों का परिणाम शत-प्रतिशत रहा है। इन स्कूलों के 10वीं या 12वीं या फिर दोनों कक्षाओं के सभी छात्र-छात्राओं को सफलता मिली है। प्रयागराज के 100 स्कूलों को यह विशिष्ट उपलि हासिल हुई है। शून्य रिजल्ट देने वाले 134 स्कूलों की तुलना में शत-प्रतिशत परिणाम देने वाले स्कूलों की संख्या कहीं अधिक है।

मेहनत रंग लायी

बरेली के शाहबाद मोहल्ले में रहने वाली सफिया जावेद ने इस साल राजकीय बालिका इंटर कालेज में बने केन्द्र में यूपी बोर्ड की हाईस्कूल परीक्षा दी थी। यह कोई आम बात नहीं थी क्योंकि सफिया पिछले पांच साल से फेफड़ों की गंभीर बीमारी से जूझ रही है। सफिया की मां आमना जावेद ने बताया कि उन्हें उम्मीद थी कि उनकी बेटी पास तो हो जाएगी लेकिन शनिवार को जब परीक्षा परिणाम आए तो साफिया ने 69 फीसद अंक हासिल किए।

आयुर्वेद की वो कौन-सी तरकीबें हैं, जो आपको सेहतमंद बना सकती है

कोरोना वायरस से छुटकारा पाने के लिए पुरे विश्वभर के सभी डॉक्टर वैक्सीन की बनाने की खोज में लगे हुए हैं। लेकिन जब तक इसकी दवा या वैक्सीन की खोज न कर ली जाए डॉक्टरों की देश के अभी लोगों को सलाह है कि वो कोरोना के संक्रमण से बचने के लिए अपनी इम्यूनिटी को अच्छी करने के उपाय करते रहें क्युकी मौजूदा दौर में यह बात तो साबित हो चुकी है कि कमजोर प्रतिरोधक क्षमता वाले लोगों पर संक्रमण का खतरा ज्यादा बना रहता है तो ऐसे में इस वायरस से बचने का अभी कोई दूसरा उपाय नहीं है बस हमे खुद का बचाव और सावधानी बरतनी होगी। लेकिन आयुर्वेद में कई ऐसे उपाय दिए ह जिससे हम अपनी इम्युनिटी बढ़ा सकते और इस वायरस के खिलाफ लड़ सकते है। जब भी हमारे पास कोई और विकल्प नहीं होता किसी भी बीमारी से लड़ने का तब हम आयुर्वेद की तरफ भागते है और हमारे आयुर्वेद में कई ऐसी बीमारियों का समाधान है जो डॉक्टर्स भी नहीं कर पाते। आयुर्वेद में ऐसे कई उपाय बताए गए हैं, जिनके जरिए हम अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत बना सकते हैं और कई तरह के वायरल संक्रमण से अपने को बचा भी सकते हैं।

आयुर्वेद की वो कौन-सी तरकीबें हैं, जो आपको सेहतमंद बना सकती है

जब भी इम्यूनिटी बढ़ाने की या अच्छी करने की बात आती है तो लोगों के दिमाग में आयुर्वेदिक काढ़े का ख्याल सबसे पहले आता है।

आपको बता दें की आयुर्वेदिक काढ़े की मदद से आप नेचुरली अपनी इम्यूनिटी बढ़ा सकते हैं। आयुष मंत्रालय द्वारा भी इम्यूनिटी बढ़ाने के लिए लोगों को काढ़ा पीने की सलाह दी गयी थी। जिसके लिए आयुष मंत्रालय ने राज्यों को काढ़ा बनाने का तरीका बताते हुए कई प्रकार के इम्युनिटी बूस्टर टिप्स भी दिए थे।

आयुष मंत्रालय ने इस कोरोना महामारी की वजह से इम्यूनिटी को अच्छी करने के लिए लोगों को एक खास आयुर्वेदिक काढ़े का नुस्खा बताया गया है। जिसे रोज़ पीने से हर व्यक्ति की इम्यूनिटी में काफी सुधार होगा और उसका शरीर कोविड-19 के संक्रमण से लड़ने में सक्षम बना रहेगा। आयुष मंत्रालय द्वारा बताये गए इस काढ़े को बनाने का सही और आसान तरीका क्या है आईये जानते हैं।

काढ़ा बनाने का तरीका-

सबसे पहले काढ़ा बनाने के लिए आप चार भाग तुलसी के पत्ते, दो भाग दालचीनी, दो भाग सोंठ और एक भाग मरीच लें लें। इन सभी को पीस कर मोटा पाउडर बना लें और 3 ग्राम का टी-बैग या 500 मिलिग्राम पाउडर की गोलियां बना लें या फिर इसको ऐसे ही पाउडर की तरह ही रख लें। अब इसे 150 मिलीलीटर उबलते हुए पानी में घोल कर थोड़ी देर खौला ले और चाय की तरह पियें। अगर आपको इसका स्वाद कड़वा लगे या आपको पसंद ना आये तो आप इसमें स्वाद के लिए चीनी और नींबू का रस भी मिला सकते हैं। इस काढ़े को दिन में एक बार या दो बार पिएं जरूर पिए इसी आपके शरीर की रोग प्रतिरोधक छमता बढ़ेगी और ये आपके लिए काफी फायदेमंद भी साबित होगी।

या फिर अगर आप किन्ही कारणों से इस काढ़े को नहीं बना पा रही तो कोरोना महामारी से बचने के लिए हल्का गरम या गुनगुना पानी पीएं। अपनी इम्युनिटी को बढ़ाने के लिए अपने भोजन में हल्दी, जीरा, धनिया, लहुसन का प्रयोग जरूर करें। रोज़ दूध में हल्दी डालकर पीने से आपका शरीर मजबूत रहेगा।

ऑनलाइन शिक्षा से बच्चो की आँखों का रखे ख़ास ख्याल

शिक्षा बदल रही है, शिक्षण कक्षाओं से ऑनलाइन दुनिया की ओर बढ़ रहा है। इसका मतलब यह है कि बच्चों और युवा वयस्कों को स्क्रीन के सामने कई घंटों में रखना चाहिए, क्योंकि उनके पास दुर्भाग्य से कोई दूसरा विकल्प नहीं है। मुझे अक्सर माता-पिता से यह सवाल पूछा जाता है, जब हम स्क्रीन के सामने अत्यधिक समय बिता रहे हैं तो हम अपने बच्चों की आंखों की देखभाल कैसे कर सकते हैं? या लंबे समय तक स्क्रीन के दौरान अपने बच्चे की आंखों की सुरक्षा कैसे करें? यह एक बहुत ही वैध चिंता का विषय है और मैं यहां इसका प्रयास करूंगा।

यदि निर्धारित हो तो चश्मा पहनें

यदि आपके बच्चे को एक नेत्र रोग विशेषज्ञ द्वारा चश्मा निर्धारित किया गया है, तो सुनिश्चित करें कि वह हर समय उन्हें पहनता है, जिसमें स्क्रीन देखने पर भी शामिल है। आमतौर पर चश्मे के लिए कोई अच्छा विकल्प नहीं है और यहां तक कि संपर्क लेंस लंबे समय तक स्क्रीन समय के लिए सबसे उपयुक्त नहीं हैं। चश्मे का नियमित और निरंतर उपयोग आंखों के तनाव को कम करने के लिए एक लंबा रास्ता तय करेगा। यदि आपके बच्चे के पास एक अपवर्तक त्रुटि या कमजोर आँखें नहीं हैं और चश्मे की आवश्यकता नहीं है, तो उसके लिए विशेष एंटी-ग्लेयर चश्मा प्राप्त करने की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि उनके स्क्रीन समय लंबे समय तक वैसे भी रहने की संभावना नहीं है।

हमेशा एक अच्छी रोशनी वाले कमरे में स्क्रीन देखें और स्क्रीन बुद्धिमानी से चुनें

यह अनुशंसा की जाती है कि आंखों के तनाव को कम करने के लिए अच्छी तरह से रोशनी वाले कमरे में स्क्रीन देखी जाए। आम तौर पर, एक मॉनिटर या स्क्रीन पर चमक का स्तर मध्यम चमक सेटिंग के बीच में रखा जाना चाहिए और उसी को पर्याप्त प्रकाश व्यवस्था वाले कमरे में देखा जाना चाहिए। मंद रोशनी वाले कमरे में स्क्रीन देखने से आंखों का तनाव बढ़ता है और रेटिना को नुकसान होता है। स्क्रीन के संबंध में ध्यान देने वाली एक और बात यह है कि यदि कोई विकल्प हो, तो अपने बच्चे को 33 सेंटीमीटर के स्मार्टफोन की बजाय 50 सेंटीमीटर की मध्यम श्रेणी के लैपटॉप या टैबलेट का उपयोग करने देना बेहतर होता है।

बार-बार आँख झपकना

स्क्रीन देखने के दौरान तल्लीन होने की प्रवृत्ति होती है और बच्चे अक्सर पलक झपकाना भूल जाते हैं। इसके परिणामस्वरूप आँखों का पानी, असामान्य पलक पैटर्न, बलपूर्वक पलक झपकना या आँख रगड़ना होगा। ये सभी पर्याप्त निमिष की कमी के कारण सूखी आंखों का परिणाम हैं और यह वातानुकूलित कमरों में खराब है। हमें अपने बच्चों को और खुद को सचेत रूप से पलक झपकते ही याद दिलाना होगा जब स्क्रीन के सामने तनाव मुक्त देखने को सुनिश्चित करना होगा।

नियमित ब्रेक लें

आंखों और शरीर दोनों के लिए स्क्रीन से नियमित ब्रेक लेना बहुत महत्वपूर्ण है। आदर्श रूप से, हमें 20-20-20 नियम का पालन करना चाहिए जिसमें कहा गया है कि प्रत्येक 20 मिनट में हमें 20 सेकंड के लिए 20 सेकंड के लिए स्क्रीन से दूर देखना चाहिए। ये छोटे विराम हमारी आंखों को एक दूर की वस्तु पर ध्यान केंद्रित करने का मौका देते हैं और गर्दन की मांसपेशियों को आराम करने में भी मदद करते हैं। यदि हम नियमित रूप से इस प्रक्रिया का पालन करते हैं तो हम एक स्क्रीन के सामने पूरा दिन बिताने के बावजूद आंखों की थकान से बच सकते हैं। यह बहुत संभव है कि ऑनलाइन कक्षाओं की अवधि 20 मिनट से अधिक हो, इसलिए इस नियम का बिल्कुल पालन नहीं किया जा सकता है, लेकिन ऐसे मामले में, सत्र समाप्त होते ही या सत्र के भीतर जब भी सुविधाजनक हो, एक ब्रेक लिया जाना चाहिए। अधिकांश ऑनलाइन पाठ्यक्रम और कक्षाएं 20-40 मिनट से अधिक अवधि के नहीं हैं और इस नियम का अभ्यास किया जा सकता है।

जो जरूरी है, उसके लिए स्क्रीन टाइम कम से कम करें

हमें काम, शिक्षा, मनोरंजन और सामाजिक कनेक्शन जैसे विभिन्न उद्देश्यों के लिए स्क्रीन का उपयोग करने की आवश्यकता है। इनमें से, वैकल्पिक तरीकों से कई काम किए जा सकते हैं। इसलिए, स्क्रीन का उपयोग न्यूनतम और केवल सबसे आवश्यक के लिए रखा जाना चाहिए। जहां भी संभव हो, बचें। माता-पिता के रूप में, यदि हम स्मार्टफोन के टेलीविजन से चिपके हुए हैं, तो बच्चे के लिए इन उपकरणों का उपयोग करना चाहते हैं। जब बच्चा पढ़ने या अन्य कम मज़ेदार काम करता है तो हम स्क्रीन के समय बिताने की उम्मीद नहीं कर सकते।

एक पत्र उनके नाम

हे भगवान'
मुझ बालक की सुनो मूझे,
माँ दिला दो मैं रोता तो कोई मुझेसे ये पूछता है, क्यों रोया बेटा तुझे क्या मेरी जरूरत है, आज गिरु या कल गिरु मुझे संभलना खुद ही है। रुक रुक चलू ये ना मुझे मंजूर है। कभी कभी भूखा सोऊ तो माँ मुझे याद आती है होता माँ दुखी तो सुनाऊ किसी में व्यर्था अपनी आज भी हुँ रोया रोया सा है खोया खोया सा तन है अधूरी सी जिंदगी है अधूरा सा घर जिस घर है मेरी माँ होगी वो स्वर्ग जैसा सुंदर होगा तभी तो तूने हे भगवान अपना स्वर्ग सजाया होगा, मैं रहूंगा हमेशा उस आसमान के तारे की तरह चमकता, नहीं झुकूंगा उस हिमालय की तरह तेरी दी हुई सीख ही तो मुझे दिखलानी है माँ है मेरी परछाई बनके जहां को ये दिखलाना हैं, हे भगवान मुझ बालक की सुनो माँ को मेरा यह संदेश तुम दो,

ज्योति मिश्रा

काशी की कहानी एक प्रेमी की जुबानी

शिवानी गुप्ता

बैटरी रिक्शे पर बैठ कर
तुम्हारे साथ बनारस घूमना
दशास्वमेंध घाट पर सफेद कुर्ते में सेल्फी लेना
हाथ जोड़कर आरती देखना, पानी मे अपने नाम के दिये तैराना
और वो BHU वाले मन्दिर की रंगीन चौचक लाइट में दौड़ लगाकर
लंका चौराहे पर मालवीय जी की मूर्ति पे हाथ पकड़ गोल चक्कर मारना
घाट अस्सी होगा पर प्रेम परसेंटेज सौ फीसदी हो जाया करेगा
बनारस नाम में ही रस है अलग अलग स्वादों वाला
वो BHU वाली चाय पिलाना
अरे वो पहलवान वाली लस्सी भी पिलाना
क्योंकि ठंडा गर्म के संगम में ही तो प्रेम होगा है ना
काल भैरव के पास वाले गौरी की कचोरी
और वो गौदोलिया की मूंगा चाट खाएंगे जहाँ वो सामने तवे पर टमाटर चाट की सोंधी खुश्बू तैरने लगेगी धनिया, जीरा, मसाला, अदरक, देशी, घी, चाशनी, नींबू, धनिया पत्ता, नमकीन, टमाटर का रस, पोस्ता दाना और काजू की महक से समूचा गोदौलिया महक उठेंगा
सिसकरे मारना तो हमसे न कहना कि एक मैंगो जूस लाओ न
फिर चलेंगे सबसे उलझे रास्तो पे ....जो है तो बहुत रंगीन
गौदोलिया उस महंगे महंगे दुकानों को देखते हुए हम चला करेंगे
पर लेंगे तो उन खुशहाल फुटपातो पर बसे वो छोटे छोटे दुकानों से जो दाम में तो big bazar को भी पीछे छोड़ देते है
पर लेना है वही से क्योंकि देखना है मुझे तुम कैसे 200 का पर्स 80 में ले लेती हो और फिर कहोगी कि
"""देखा बुद्धू ऐसे होती है खरीदारी""
कसम से इस खरीदारी को देख के मन करता है एक ठो छोटका भारत रत्न दे दे तुमको
और फिर विश्वनाथ जी की गलियों के अलग अलग दुकानों पर झुमके ट्राय करना....तुमको तो ये गड़बड़झाला टाइप कान का अच्छा लगता है न
थोड़ा भक्ति टाइप है हम तो साथ मे दर्शन भी कर लेना
हम तुमको और तुम हमको मांग लेना कहते है बाबा खाली नही जाने देते
वैसे तो बाबा का भांग हिला देता है पर उससे ज्यादा तो तुम कपार पर चढ़ जाती हो
तमाम स्वादों से होते हुए और वो उलझे बिजली की तारो की तरह उलझन वाले उन बनारस की गलियों से गुजरते हम तय कर लेंगे सुबह-ऐ-बनारस से लेकर रात की पीली रोशनी में डूबे काशी का
वैसे तुम मिली न हो अभी तक पता न कहा हो अब्बी तक इतना लेट तो मानसून भी न आता है बनारस में जितना तुम लेट की हो

वैसे इतना भिखारी भी न समझना कि हम auto का 5 रुपया बचा रहे है
Auto नही लिया करते है पता है क्यों...क्योंकि auto जल्दी पहुचा देते है और मैं तो तुम्हारे साथ रास्ता देर तक सफर करना चाहता हु न
अच्छा सुनो बारिश बन्द हो गयी है घर भी जाना है
बाकी के सपने फिर लिखूंगा क्योंकि ये है तो
"मेरे बनारस के फ्री सपने"

फैशन का रूप इख्तियार करता मास्क

कोरोना महामारी के चलते मास्क अब लोगों की जीवन शैली का अहम हिस्सा बन गया है और कोरोना वायरस के प्रसार की रोकथाम के लिए विशेषज्ञों ने सर्जिकल मास्क की बजाय कपड़े के मास्क पहनने की सलाह दी तो फैशन इंडस्ट्री के तमाम लग्जरी ब्रांड से लेकर बुटीक फैशन कारीगर समुदाय तक चेहरे के मास्क को एक फैशन एसेसरीज के रूप में बहुतायत संख्या मे निर्माण करने लगे जैसे कहीं पगड़ी से मेल खाता मास्क तो कहीं मास्क से मिलता जुलता बटुआ और कोविड-19 को देखते हुए सरकार तथा WHO के नियमों के अनुसार हाथों की सुरक्षा हेतु अनेकों प्रकार के दास्ताने भी बनाए जा रहे हैं।

हम सब यह बात भली-भांति जानते हैं कि फैशनेबल दिखना हम प्रत्येक मानवजाति को पसंद है और देखा जाए तो अच्छे पहनावे का हमारे व्यक्तित्व पर सकारात्मक असर भी पड़ता है तथा संभवतः मास्क को फैशन का अंग बनाने के पीछे भी मास्क बनाने वालों की यह मानसिकता भी बन गई है। जिस तरह इन दिनों विभिन्न प्रकार के डिजाइनर मास्क की मांग बढ़ी है, उसे देखते हुए कहा जा सकता है कि आज मानव आसानी से अपनी सुरक्षा की चीजों में भी अपने परिधान के अनुसार विभिन्न आकृतियों से सुसज्जित मेल खाते हुए मास्क को खोज ही लेते हैं।

अब पूरे विश्व पटल पर यह स्पष्ट होता जा रहा है कि कोरोना महामारी हम मनुष्यों के बीच से इतनी जल्दी जाने वाला नहीं है और यह भी अटूट सत्य है कि सम्पूर्ण विश्व के मानवजाति इतने लंबे समय तक अपने घरों में बंद भी नहीं रह सकती इसलिए सकारात्मक पक्ष को देखते हुए लोगों ने मात्र काले, भूरे या सफेद मास्क को छोड़कर प्रिंटेड मास्क को अपनाने का फैसला किया लेकिन कोरोना महामारी के शुरुआती दिनों में जुगाड़ वाले मास्क जैसे गमछा, रुमाल तथा दुपट्टा इत्यादि के द्वारा ही अपने आपको सुरक्षित करते नजर आते थे लेकिन इस आधुनिकता से परिपूर्ण परिवेश मे अब जुगाड़ की जरूरत नहीं है।

बच्चों को लुभाने के लिए कार्टून चरित्र वाले मास्क, महिलाओं की साड़ी तो युवती के सूट के रंगों वाले मास्क बहुतायत मात्रा मे बाजार मे उपल हैं और तो और फोटोग्राफरों का लॉकडाउन मे फोटो स्टूडियो का काम ठप्प पड़ गया, तो वह अपना व्यवसाय बदलकर जैसा चेहरा वैसा दिखने वाले मास्क बनाने पर काम करने लगे तथा इस प्रकार खास मौके पर चेहरे के निचले हिस्से पर मुद्रित होता है जिसको कॉटन के तैयार मास्क पर प्रिंट किया जाता है और यह आसानी से 15 से 20 मिनट में बनकर तैयार हो जाता है तथा आजकल बाजार ऐसे मास्क की भरमार हैं जिन पर अभिनेताओं या क्रिकेट खिलाड़ियों की मूंछ और दाढ़ी बने हुए मास्क तैयार है तथा मास्क के निर्माण हेतु बेरोजगारों को सरकार की सहायता से अब कुटीर उद्योग में शामिल होकर अपने आपको स्वावलंबी के रूप मे समय की मांग के अनुसार प्रतिभा दिखाने का सुनहरा अवसर भी प्रदान कर रहा है।

कविता पाठक

25 जून 1983, जब भारत ने पहली बार जीता क्रिकेट विश्व कप

कपिल देव की टीम को टूर्नामेंट से पहले मौका नहीं दिया गया था, लेकिन टीम ने सभी बाधाओं को टाल दिया।

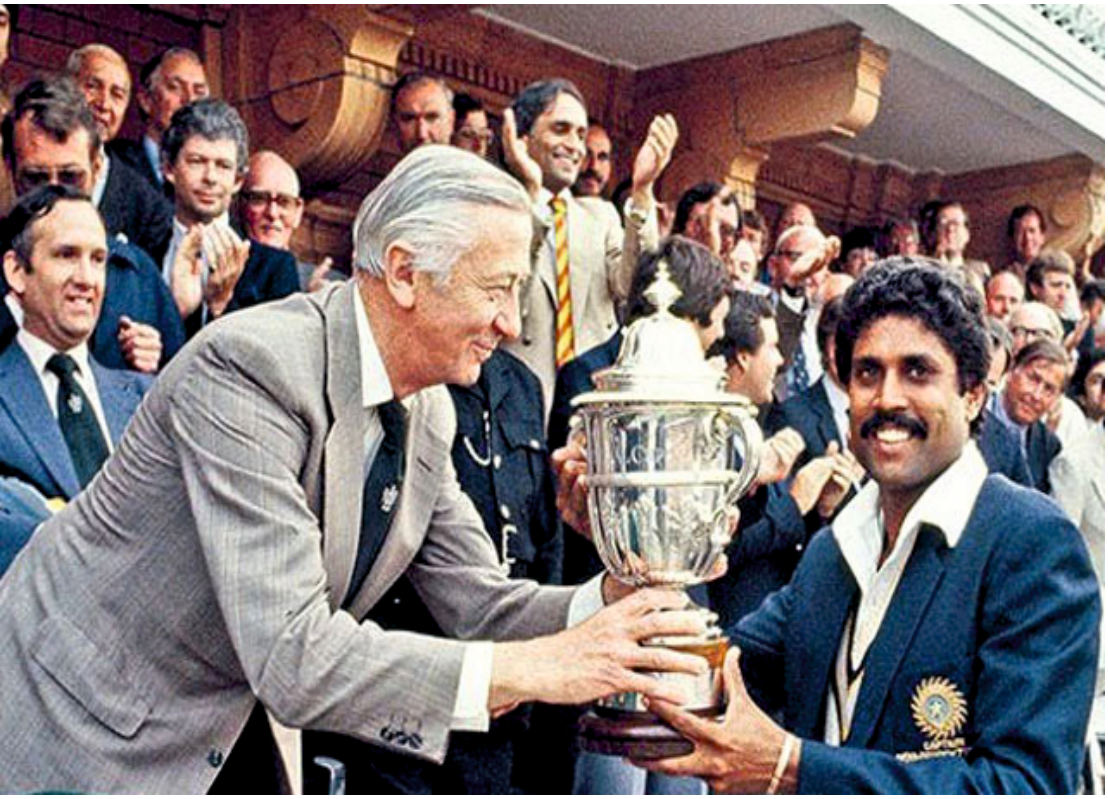

कपिल देव ने कहा, "हम अपनी टीम के बारे में गर्व महसूस कर रहे थे। हमने टूर्नामेंट जीतकर खुद को गौरवान्वित किया। विश्व कप जीत एक अद्भुत चीज है। इस वजह से पूरे देश ने जश्न मनाया।"

दुनिया के महान ऑलराउंडर्स में से एक कपिल ने कहा, "कोई भी बड़ी उपलब्धि अगली पीढ़ी को प्रभावित करती है। 1983 की जीत ने हमारे देश में बहुत बड़ा बदलाव किया। माता-पिता ने खेलों के मूल्य में वृद्धि करना शुरू कर दिया, इसलिए यह एक बड़ी बात थी।"

रवि शास्त्री ने कहा कि विश्व कप जीत ने देश में खेल की नींव रखी।

"शास्त्री, जो अब भारत के टीम कोच हैं, ने ट्वीट किया।'#ThisDayThatYear 1983 में 25 जून को, हमें विश्वास था और हम विश्व विजेता बन गए और भारत में Cricket का चेहरा एक बार और सभी के लिए बदल दिया

एस मदन लाल ने कहा, "हमारे दिमाग में यादें अभी भी ताजा हैं। विव रिचर्ड्स कपिल द्वारा पकड़ा गया विकेट ने भारत के खेल को झुका दिया।"

"किसी ने हमें टूर्नामेंट जीतने का मौका नहीं दिया। हमने 1975 और 1979 के विश्व कप में सिर्फ दो मैच जीते, इसलिए 1983 की जीत बहुत बड़ी थी। जब ऐसी जीत सभी बाधाओं के खिलाफ आती है, तो वे इतिहास का निर्माण करते हैं,"

मदन लाल ने कहा, "यह किसी एक व्यक्ति की जीत नहीं थी। यह पूरी टीम की जीत थी। सभी ने अच्छा प्रदर्शन किया, इसलिए हमने टूर्नामेंट जीता।"

युवराज सिंह - 2007 के टी 20 विश्व कप विजेता टीम के सदस्य और 2011 के एकदिवसीय विश्व कप विजेता टीम - ने 1983 की जीत को 'राष्ट्रीय गौरव का क्षण' कहा

गहराई से ऋणी, 'भारतीय ऑफ स्पिनर रविचंद्रन अश्विन ने ट्वीट किया।

'आज से 37 साल पहले भारत में क्रिकेट का परिदृश्य बदल गया था। आज हम में से कई लोगों के लिए खेल को अपना करियर बनाने के लिए @therealkapildev और टीम का धन्यवाद।

पूर्व भारतीय क्रिकेटर मोहम्मद कैफ ने ट्वीट किया, "25 जून, 1983: कपिल देव की प्रतिष्ठित छवि, लॉर्ड्स में विश्व कप ट्रॉफी में भारतीय क्रिकेट इतिहास में एक महत्वपूर्ण क्षण है।" 'इसने भारत में क्रिकेट को बदल दिया। इस जीत ने अगली पीढ़ी को असंभव और सपनों को साकार करने के लिए प्रेरित किया। '

डीआरएस को बतया धोनी रिव्यु सिस्टम - आकाश चोपड़ा

भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान महेंद्र सिंह धोनी ने अपने पूरे करियर में डिसीजन रिव्यू सिस्टम कॉल्स के साथ अच्छी सफलता हासिल की है। लेकिन कुछ को यह आश्चर्यजनक लग सकता है कि शुरू में, धोनी तकनीक के प्रशंसक नहीं थे, जैसा कि भारत के पूर्व क्रिकेटर आकाश चोपड़ा ने बताया था।

अपने यूट्यूब चैट शो क्रिक कास्ट में पाकिस्तान की प्रसारक सवेरा पाशा से बात करते हुए चोपड़ा ने बताया कि भारत शुरू में डीआरएस तकनीक के इस्तेमाल को स्वीकार करने से क्यों हिचक रहा था।

"भारत श्रीलंका के खिलाफ 2008 में डीआरएस की कोशिश करने वाली पहली टीम थी। एमएस धोनी उस समय अग्रणी नहीं थे, यह अनिल कुंबले थे। उस दौरे पर, भारत के पास डीआरएस का सफल उपयोग नहीं था, टीम भयानक रूप लेती रही। तब फैसला किया कि हमें डीआरएस पसंद नहीं है। '

उन्होंने कहा, "धोनी डीआरएस के प्रशंसक नहीं थे और यह मायने रखता है कि एक कप्तान आखिरकार क्या सोचता है। धोनी को सबसे लंबे समय के लिए आश्वस्त किया गया था कि डीआरएस फुल-प्रूफ नहीं है। धोनी को यह पसंद नहीं आया।"

चोपड़ा ने कहा, "विराट कोहली काफी विपरीत हैं, वह डीआरएस के बहुत बड़े प्रशंसक हैं। वह हर मैच में संभव चाहते हैं, अब सोच बदल गई है और डीआरएस को गले लगा लिया गया है

"एक और विचित्र बात यह है कि, धोनी को यह पसंद नहीं आया, लेकिन अब मैं डीआरएस को धोनी रिव्यू सिस्टम' कहता हूं। क्योंकि, अगर धोनी ने स्टंप के पीछे से कहा, कि हमें डीआरएस लेना है, तो 10 में से 9 बार, वह सही हो जाता है, तब भी जब आपको लगता है कि वह गलती कर रहा है, तो वह सही हो जाएगा

अगर आपकी स्किन नेचुरली ग्लोइंग हैं तो फिर आपको किसी भी तरह के मेकअप की भी जरूरत ही नहीं

नेचुरल ब्यूटी की कोई बात ही नहीं है। आप भले ही मेकअप करने के बाद खुद को कुछ पल खूबसूरत दिख लेती, लेकिन अगर आपकी स्किन नेचुरली ग्लोइंग हैं तो फिर आपको किसी भी तरह के मेकअप की भी जरूरत ही नहीं पड़ेगी। ग्लोइंग स्किन पाने के लिए महिलाएं बाजार में उपल कई तरह की कॉस्मेटिक क्रीम का इस्तेमाल करने लगती हैं, लेकिन फिर भी उन्हें अच्छा और मनचाहा रिजल्ट नहीं मिल पाता। अगर आप भी चाहती हैं कि आपकी स्किन नेचुरली ग्लो करे तो आपको कुछ बातों का खासतौर पर हमेशा ध्यान देना चाहिए।

पीएं पर्याप्त पानी-

पानी हमारे शरीर के लिए बोहोत ज़रूरी होता है। पानी सिर्फ हमे हेल्दी ही नहीं रखता, बल्कि पानी अधिद से अधिक पानी पीने से हमारी स्किन भी ग्लो करती है। दरअसल, जब आप पर्याप्त मात्रा में पानी पीते हैं तो इससे शरीर के अंदर मौजूद विषाक्त पदार्थ बाहर निकल जाते हैं और इससे आपकी स्किन चमकने लगती हैं। इसलिए दिनभर में कम से कम आठ से दस गिलास पानी ज़रूर पीना चाहिए।

हेल्दी डाइट-

जब आप अंदर से हेल्दी होते हैं तो उसका असर आपकी स्किन पर साफ़ नज़र आने लगती है। इसलिए ग्लो लाने के लिए आप क्रीम लगाने के बजाय हेल्दी रहने पर फोकस करें। सबसे पहले आप अपनी डाइट को सुधारे। अपनी डाइट में पोषक तत्वों से भरे खाने को शामिल करें। खासतौर से ओमेगा 3, फैटी एसिड, विटामिन सी व फाइबर से युक्त भोजन ही करें। इसके अलावा अगर आपके शरीर में विटामिन की कमी हो रही हो तो उसे पूरा करने के लिए आप डॉक्टर की सलाह भी ले सकती है और डॉक्टर की सलाह पर ही मल्टीविटामिन की टेबलेट्स भी ले सकते हैं।

चीनी और नमक कम-

चीनी और नमक हर किसी के जीवन में रोज़ इस्तेमाल में आने वाली चीज़ें हैं लेकिन अगर आप चाहती हैं कि आपकी स्किन नेचुरली ग्लो करें और हमेशा खिली खिली रहे तो आप रोज़ के दिनचर्या में चीनी व नमक की मात्रा को जरूर कम कर दें क्युकी बहुत ज्यादा नमक व चीनी का सेवन आपकी हेल्थ के साथ-साथ स्किन को भी प्रभावित करता है।

करें वर्कआउट-

सुनने में शायद आपको काफी अजीब लग सकता है लेकिन वर्कआउट भी ग्लोइंग स्किन पाने का एक आसान उपाय है। दरअसल, जब आप वर्कआउट करते हैं तो इससे आपकी स्किन पर ब्लड सर्कुलेशन बेहतर होता है और स्किन ग्लो करने लगती है। साथ ही वर्कआउट से आपका स्टेमिना भी बढ़ जाता है और आप हेल्दी बनते हैं।

होममेड पैक-

हेल्दी लाइफस्टाइल अपनाने के अलावा आप कुछ घरेलू फेस पैक के जरिए भी अपनी स्किन को ग्लोइंग बनाया जा सकता हैं। जैसे- आधा चम्मच हल्दी पाउडर लेकर उसमें चार टेबलस्पून बेसन मिक्स करें। अब आप इसमें पानी या दूध की मदद से एक फाइन पेस्ट बनाएं। अब आप इसे अपने चेहरे पर लगलें और 15-20 मिनट के लिए छोड़ दें। जब ये फेस पैक सुख जाए तो पानी की मदद से अपने चेहरे को साफ कर लें। या फिर नारियल के तेल को हल्का गर्म करके उसे अपने चेहरे व गर्दन पर लगाकर सर्कुलर मोशन में अच्छे से मसाज करें। इसे आप रातभर के लिए ऐसेही छोड़ दें। अगर आप स्किन को एक्सफोलिएट करना चाहते हैं तो आप इसमें थोड़ी शुगर भी मिक्स कर सकते हैं।

या तो आप एक टेबलस्पून एलोवेरा जेल लेकर एक चुटकी हल्दी, एक चम्मच शहद व एक चम्मच दूध डालकर मिक्स कर लें। अब इस मिश्रण को चेहरे व गर्दन पर अप्लाई करें और 20 मिनट के लिए सूखने के लिए छोड़ दें।अंत में गुनगुने पानी से स्किन को अच्छी तरह से साफ कर लें।

सरकारी सपोर्ट से घर बैठे महिलाएं कर सकेंगी ये 4 बिजनेस, 3 लाख तक हो सकती है इनकम

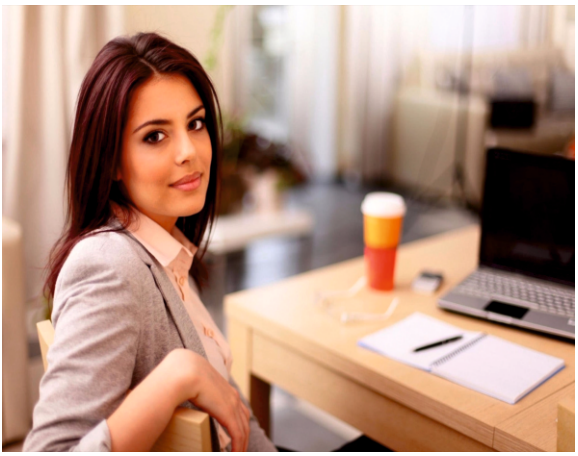

बताएंगे, जिसे आप आसानी से शुरू कर सकती हैं और इन बिजनेस से आप 3 लाख रुपए तक कमाई कर सकती हैं।

कैसे मिलता है सरकार का सपोर्ट–

सबसे पहले आपको यह बताते हैं कि सरकार की किन स्कीम के तहत आप सपोर्ट ले सकती हैं। अगर आपके पास पर्याप्त पैसा नहीं है तो आप प्रधानमंत्री रोजगार योजना के तहत जिला उद्योग केंद्र या खादी विलेज इंडस्ट्री कमीशन के कार्यालय में जाकर अपनी प्रोजेक्ट रिपोर्ट के साथ अप्लाई कर सकते हैं। जिला उद्योग केंद्र आपकी प्रोजेक्ट रिपोर्ट की पड़ताल करके अपनी मंजूरी के साथ बैंक को भेज देगा। जिसके बाद बैंक आपको लोन देगा, जिसमें 15 से 25 फीसदी तक की सब्सिडी आपको मिल जाएगी।

घर से करें यह बिजनेस–

आप घर से स्कूल बैग बनाने का काम शुरू कर सकती हैं। नेशनल स्मॉल इंडस्ट्रीज कॉरपोरेशन (एनएसआईसी) द्वारा तैयार की गई प्रोजेक्ट रिपोर्ट के मुताबिक, यदि आप साल भर में 15 हजार बैग बनाना चाहती हैं तो आपको लगभग 11.55 लाख रुपए के इन्वेस्टमेंट की जरूरत पड़ेगी। इसमें आपको केवल 10 फीसदी पैसे का इंतजाम करना होगा। यानी कि आपको लगभग 1 लाख 10 हजार रुपए का इंतजाम करना होगा। इसके लिए आपको कोई अलग से बिजली कनेक्शन भी नहीं लेना होगा। अगर आपका घर 100 वर्ग मीटर में है तो आप छत पर शेड डाल कर भी यह काम कर सकती हैं। प्रोजेक्ट रिपोर्ट के मुताबिक यदि यदि बैग का औसत मूल्य 100 रुपए भी रखा जाए तो 15 हजार बैग की कीमत लगभग 15 लाख रुपए हुई, जबकि आपकी इन्वेस्टमेंट 11 लाख 55 हजार रुपए है। यानी कि आप पहले साल में लगभग 3 लाख 45 हजार रुपए कमा सकती हैं। जबकि अगले साल से आपका मशीनरी और इन्स्टॉलेशन का खर्च कम हो जाएगा, जिससे आपकी कमाई और बढ़ सकती है।

50 हजार में कर सकती हैं यह बिजनेस–

मार्केट में पर्स और हैंड बैग की भी अच्छी खासी सेल हो सकती है। हैंड बैग बनाने का काम भी आप घर बैठे कर सकती हैं। यदि आपको लगता है कि आप 10000 हैंड बैग और 10000 पर्स बनाकर अपना बिजनेस चला सकती हैं तो आपको लगभग 5 लाख रुपए का इन्वेस्टमेंट करना होगा। यदि इसमें से आप 90 फीसदी लोन के लिए अप्लाई करते हैं तो आपको लगभग 50 हजार रुपए का इंतजाम करना होगा। अगर आप थोक रेट में यदि 50 रुपए में भी बैग सप्लाई करती हैं तो आप लगभग 10 लाख रुपए तक की सेल कर सकती हैं।

महिलाओं को भाता है यह बिजनेस–

आप अगर घर पर ही बुटिक खोल लेते हैं तो आप अच्छी खासी इनकम कर सकते हैं। इसके लिए आप प्रधानमंत्री रोजगार योजना के तहत लोन और सब्सिडी भी ले सकते हैं। आप 2 से 3 लाख रुपए में यह बिजनेस कर सकती हैं। इसके लिए आपको 90 फीसदी तक लोन भी मिल जाएगा। यानी कि आपको 20 से 30 हजार रुपए का इन्वेस्टमेंट करना होगा। इसके बाद आपकी मार्केटिंग स्किल तय करेगी कि आप कितना कमा सकती है। जानकार मानते हैं कि आप आसानी से 20 से 30 फीसदी तक प्रॉफिट कमा सकते हैं।

घर बैठ कर बेचे प्रोडक्ट्स–

घर बैठ कर बेचे प्रोडक्ट्स मोदी सरकार ने महिलाओं को भी घर पर रह कर बिजनेस का मौका उपल कराया है। इस स्कीम को ई–महिला हाट नाम दिया गया है। महिलाएं इस ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर घर पर बनाए गए प्रोडक्ट्स भी बेच सकती है। या मैन्युफैक्चरर्स से सामान बनवाकर आगे बेच सकती हैं। यह प्लेटफॉर्म मिनिस्ट्री ऑफ वूमेन एंड चाइल्ड डेवलपमेंट द्वारा तैयार किया गया है। इस प्लेटफॉर्म पर महिलाएं फ्री में अपना रजिस्ट्रेशन कराकर अपने प्रोडक्ट डिस्पले कर सकते हैं, यदि किसी सेलर्स को आपका प्रोडक्ट पसंद आता है तो वह सीधे आपसे संपर्क कर सकता है। आपको दूसरे ऑनलाइन ट्रेडिंग पोर्टल की तरह कमीशन भी नहीं देना होगा। अगर आप इस पोर्टल के लिए अप्लाई करना चाहते हैं तो निचे दिए हुए लिंक पर जा कर आप अपना रजिस्ट्रेशन करा सकती है।

सोमवार से हो रही है सावन की शुरुआत और महीने का आखिरी दिन भी सोमवार रहेगा, इससे पहले 2017 में भी बना था ऐसा संयोग

हिंदू कैलेंडर का पांचवा महीना यानी श्रावण मास 6 जुलाई को शुरू होने वाला है। इस बार सावन महीने में 29 दिन ही रहेंगे। शुक्लपक्ष की अष्टमी तिथि के क्षय होने के कारण ऐसा होगा। इस बार सावन महीने की शुरूआत उत्तराषाढ़ा नक्षत्र और वैधृति योग में होगी। लेकिन बृहस्पति का अपनी ही राशि धनु में होना शुभ है। इसके साथ ही चंद्रमा मकर राशि में रहेगा। सावन में 25 से ज्यादा शुभ योग बन रहे हैं। इस बार सावन महीने का पहला और आखिरी दिन सोमवार ही होगा। इस महीने में 5 सोमवार का शुभ संयोग बनने से ये महीना और भी खास रहेगा।

सावन महीने की शुरुआत 6 जुलाई को सोमवार से होगी और समापन भी 3 अगस्त सोमवार को होगा। इस बार सावन में पांच सोमवार भी आ रहे हैं, जो शुभ संकेत है। ऐसा ही संयोग 3 साल पहले 2017 में बना था।इस बार सावन महीने में 11 सर्वार्थसिद्धि, 3 अमृतसिद्धि और 12 दिन रवियोग रहेंगे। इन शुभ योगों में की गई भगवान शिव की पूजा से विशेष फल मिलता है। पूजा-पाठ में का शिवजी का अभिषेक करने से आयु, धन और स्वास्थ्य में वृद्धि होती है।

सावन की पहली तिथि का उदय सोमवार को-

श्रावण कृष्ण पक्ष प्रतिपदा की शुरुआत 5 जुलाई रविवार को सुबह 10.15 से होगी, जो दूसरे दिन सोमवार को सुबह 9.25 तक रहेगी। सोमवार को प्रतिपदा उदयातिथि में होने के कारण सावन की शुरुआत सोमवार से ही मानी जाएगी। श्रावण महीने में सोमवार 6, 13, 20, 27 जुलाई व 3 अगस्त को हैं। 20 जुलाई को सोमवती व हरियाली अमावस्या है। 3 अगस्त को रक्षाबंधन है।

श्रावण महीने के सोमवार-

सोमवार, 06 जुलाई 2020 पहला सावन सोमवार व्रत

सोमवार, 13 जुलाई 2020 दूसरा सावन सोमवार व्रत

सोमवार, 20 जुलाई 2020 तीसरा सावन सोमवार व्रत

सोमवार, 27 जुलाई 2020 चौथा सावन सोमवार व्रत

सोमवार, 03 अगस्त 2020 पांचवां सावन सोमवार व्रत

इस बार सावन में पांच सोमवार पड़ेंगे। जिसमें तीन सोमवार कृष्णपक्ष और दो शुक्लपक्ष में होंगे। धर्म ग्रंथों के श्रावण माह में हर सोमवार को व्रत और भगवान शिव की पूजा करने से हर तरह की परेशानियां खत्म हो जाती हैं और बीमारियों से भी छुटकारा मिल जाता है। सावन सोमवार से ही सौलह सोमवार व्रत की शुरुआत होती हैं। श्रावण मास में 10 जुलाई को मोनी पंचमी, 14 जुलाई को मंगला गौरी व्रत, 16 जुलाई को एकादशी, 18 जुलाई को प्रदोष, 20 जुलाई को हरियाली अमावस्या, सोमवती अमावस्या, 23 जुलाई को हरियाली तीज के साथ ही 25 जुलाई को नागपंचमी और 3 अगस्त को रक्षाबंधन मनाया जाएगा।

- सावन सोमवार के दिन जो व्रत ना भी रखता हो वो किसी भी अनैतिक कार्य करने से बचें, बुरे विचार मन में ना लाएं साथ ही ब्रहमचर्य का पालन करें।
- सावन सोमवार के दिन सुबह जल्दी उठकर भगवान का ध्यान करें। साथ ही बड़े और असहाय लोगों का अपमान ना करें।
- सावन में भगवान शिव की पूजा में कम से कम बेलपत्र और धतूरा जरूर रखें।
- सावन में बैंगन खाने से बचें क्योंकि शास्त्रों में बैंगन को अशुद्ध बताया गया है।
- सावन में मांस-मदिरा से दूर रहना चाहिए। इससे ना सिर्फ आप पर जीवहत्या का पाप लगता है बल्कि आपका मन भी अशुद्ध होता है।
- सावन हरियाली का मौसम है। यही हरियाली शिवजी को अत्यंत पसंद आती है इसलिए पेड़-पौधों को काटने से बचना चाहिए।

महाराष्ट्र जेल में 68 कैदी कोरोना पॉजिटिव, जेल में है 300 से ज्यादा कैदी

महाराष्ट्र की अकोला जिला जेल में 68 कैदी कोरोना पॉजिटिव पाए गए। इनमें से कई बिना लक्षण वाले (एसिम्टोमैटिक) हैं। कैदियों के लिए जेल में ही आइसोलेशन वार्ड बनाया गया है। डिप्टी कलेक्टर संजय खडसे ने बताया कि कैदियों की देखभाल की सभी व्यवस्थाएं की गई। जेल अधिकारी ने बताया कि जिला जेल में अभी 300 कैदी हैं और हाल ही में किसी नए कैदी को नहीं लाया गया है। इससे पहले 24 जून को भी जिला जेल में 18 कैदी संक्रमित मिले थे।

देवशयनी एकादशी से चार महीनों तक नहीं होगा कोई भी शुभ कार्य

1 जुलाई को देवशयनी एकादशी है। इसी एकादशी के साथ चातुर्मास का महीना भी आरंभ हो जाएगा। हिंदू कैलेंडर के अनुसार इन चार महीनों में सभी तरह के शुभ कार्यों पर विराम लग जाता है। मान्यता है कि देवशयनी एकादशी से भगवान विष्णु जोकि इस सृष्टि के पालनकर्ता हैं शयन करने के लिए पाताल लोक में क्षीर सागर के अंदर चले जाते हैं। देवशयनी एकादशी को कई अन्य नामों से भी जाना जाता है जैसे- हरिशयनी एकादशी, शयनी एकादशी, पद्मा एकादशी, पद्मनाभा एकादशी आदि। आषाढ़ महीने की एकादशी पर

भगवान विष्णु चार महीने की निद्रा के लिए पाताल लोक में निवास करते हैं तब सृष्टि की जिम्मेदारी भगवान शंकर के हाथों में आ जाती है। इस चार महीने की समयावधि को ही चातुर्मास कहते हैं। चार महीने के बाद देवोत्थानी एकादशी पर भगवान विष्णु अपनी निद्रा से जागकर पुनः सृष्टि का संचालन करने के लिए पाताल लोक से विष्णु लोक में पधारते हैं। इसी के साथ चार महीनों तक शुभ कार्यों और विवाह में लगी पाबंदियां हट जाती है और शुभ कार्य एक बार फिर से आरंभ हो जाता है।

यूपी में इस जिलें में एक दस्तावेज पर 192 शिक्षकों को मिल रहा वेतन

यूपी में अनियमित एवं नियम के विरुद्ध बेसिक शिक्षा विभाग में कामकाज कैसे होता है यह फिर से सामने आया है। सूबे के परिषदीय विद्यालयों में तैनात 192 अध्यापकों के एक ही पैन नंबर पर वेतन लेने का मामला उजागर हुआ है। इस सूचना के बाद बेसिक शिक्षा विभाग में हड़कंप मचा है। मामला सामने आते ही बेसिक शिक्षा विभाग के

अधिकारी कार्रवाई की दुहाई दे रहे हैं। महानिदेशक विजय किरन आनन्द द्वारा प्रेषित पत्र में स्पष्ट किया गया है कि माह मई 2020 के वेतन भुगतान के परीक्षण से सूबे में 192 ऐसे प्रकरण संज्ञान में आए हैं, जिसमें एक ही नाम व पैन नंबर की दो अलग अलग इंट्री विभिन्न जनपदों की फ़ाइलों में सम्मिलित हैं, परन्तु बैंक अकाउंट नंबर अलग हैं। इसी तरह 24 प्रकरण ऐसे हैं, जिसमें एक ही बैंक अकाउंट नंबर दो भिन्न शिक्षकों के सम्मुख अंकित है। महानिदेशक आनन्द ने तत्काल सत्यापन कर दो दिन में आख्या तलब की है।

कश्मीर में एलपीजी के स्टॉक और स्कूलों को खाली करने के आदेश पर दहशत में लोग : उमर अब्दुल्ला

तेल विपणन कंपनियों को कश्मीर घाटी में एलपीजी (LPG) सिलेंडरों की दो महीने की आपूर्ति का स्टॉक रखने का निर्देश देने संबंधी एक सरकारी आदेश को लेकर अटकलें लगाई जा रही हैं। वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) पर गतिरोध के मद्देनजर इस आदेश को लेकर अटकलें लगाई जा रही है। वहीं दूसरी ओर, नेशनल कॉन्फ्रेंस के नेता उमर अब्दुल्ला ने इस तरह के कदम की आवश्यकता पर सवाल उठाया है और कहा कि इस तरह के आदेश दहशत का माहौल पैदा करते हैं। कश्मीर में खाद्य, नागरिक आपूर्ति और उपभोक्ता मामलों के विभाग के निदेशक द्वारा जारी किए गए 27 जून के आदेश के अनुसार, जम्मू और कश्मीर के उपराज्यपाल जी सी मुर्मू ने 23 जून को एक बैठक में दिशा-निर्देश पारित किए हैं कि ''भूस्खलन की घटनाओं के चलते राष्ट्रीय राजमार्ग के बंद होने के कारण एलपीजी का पर्याप्त स्टॉक सुनिश्चित किया जाये।

एनआईए ने ISI एजेंट के घर पर मारा छापा

एनआईए ने रविवार को उत्तर प्रदेश के चंदौली और वाराणसी में स्थित पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आईएसआई के एक एजेंट के घर पर छापा मारा। इस आरोपी को सामरिक रूप से महत्वपूर्ण ठिकानों के फोटो और सेना की गतिविधियों से जुड़ी सूचनाओं को पाकिस्तान स्थित संदिग्ध हैंडलर्स को भेजने के आरोप में अरेस्ट किया गया है। राशिद को भारत में संवेदनशील और रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण प्रतिष्ठानों के फोटो और सेना की गतिविधियों से जुड़ी सूचनाएं आईएसआई को भेजते हुए पकड़ा गया था। तलाशी के दौरान राशिद के घर से मोबाइल फोन और कुछ आपत्तिजनक दस्तावेज मिले हैं। राशिद के साथ पूछताछ अभी जारी है। एनआईए यह पता लगाने की कोशिश कर रही है कि कोई और जासूसी में शामिल तो नहीं था।

शादी के दिन डोली की जगह दुल्हन की उठी अर्थी, कोरोना के डर से नहीं किया इलाज

कोरोना काल (COVID-19 epidemic) में अन्य बीमारियों से पीड़ित इलाज के अभाव में दम तोड़ रहे हैं. इसकी बानगी कन्नौज (Kannauj) जिले में देखने को मिली. यहां विवाह वाले दिन दुल्हन बीमार पड़ी तो परिजन उसे लेकर कन्नौज से लेकर कानपुर तक भटकते रहे, लेकिन कोरोना के खौफ में डॉक्टरों ने उसका इलाज नहीं किया. इलाज के अभाव में आखिरकार दुल्हन ने दम तोड़ दिया. पिता के सपने उस समय अरमान बनकर ही रह गए जब डोली की जगह उसे अपनी बेटी की विदाई अर्थी पर करनी पड़ी. घटना के बाद पूरे गांव में सन्नाटा पसरा हुआ है.

यूपी बोर्ड परीक्षा में प्राप्त अंको की संतुष्टि के लिए स्क्रूटिनी के लिए करें आवेदन

यूपी बोर्ड यानि उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद (यूपीएमएसपी) द्वारा हाई स्कूल (10वीं) और इंटरमीडिएट (12वीं) कक्षाओं की बोर्ड परीक्षाओं के नतीजों की घोषणा कल 27 जून 2020 को कर दी थी। दोनो ही कक्षाओं के छात्र विभिन्न विषयों की परीक्षाओं के आधार पर मिले अंकों से यदि असंतुष्ट हैं तो वे परिषद द्वारा पहली बार उपल कराये गये स्क्रूटिनी के विकल्प के जरिए अपनी बोर्ड परीक्षाओं की कॉपियों की जांच फिर से करा सकते हैं। उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद (यूपीएमएसपी) की सचिव नीना श्रीवास्तव द्वारा दी गयी जानकारी के अनुसार यूपी बोर्ड स्क्रूटिनी फॉर्म 2020 से सम्बति निर्देश परिषद की ऑफिशियल वेबसाइट, upmsp.edu.in पर दे दिया गया है। यूपी बोर्ड स्क्रूटिनी फॉर्म 2020 भरने की अंतिम तिथि 22 जुलाई निर्धारित की गयी है।

पीओके में चीन को लगा झटका, 60 अरब डॉलर की परियोजना का काम हुआ बंद

गलवान घाटी घटना के बाद भारत के साथ विवाद के बीच चीन को पाक अधिकृत कश्मीर में बड़ा झटका लगा है. चीन की कई अरब डॉलर की महत्वाकांक्षी परियोजना पर ब्रेक लग गया है. बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव परियोजना के तहत चलने वाली अधिकतर परियोजनाएं कोरोनावायरस संक्रमण के कारण प्रभावित हुई हैं और कई जगहों पर काम बंद है. पाकिस्तान के बलूचिस्तान प्रांत में स्थित ग्वादर बंदरगाह को चीन के शिनजियांग प्रांत से जोड़ने वाला चीन-पाक आर्थिक गलियारा (सीपीईसी), बीआरआई की मुख्य परियोजना है. इन परियोजनाओं को फिर से गति देने के प्रयास के तहत चीन ने पिछले हफ्ते बीआरआई की पहली वीडियो कॉन्फ्रेंस की. रिपोर्ट में कहा गया है कि जो परियोजनाएं प्रभावित हुई हैं उनमें 60 अरब अमेरिकी डॉलर वाली सीपीईसी भी शामिल है.

डब्ल्यूएचओ के मुताबिक ऑक्सफोर्ड एस्ट्राजेनेका कोरोना वैक्सीन की दौड़ में सबसे आगे

दुनियाभर में कोरोना वायरस से संक्रमित लोगों की संख्या एक करोड़ से अधिक हो गई है। इस खतरनाक महामारी के इलाज के लिए वैक्सीन की खोज में भी दुनिया के कई देश और उनके कई स्वास्थ्य और शोध संस्थान लगे हुए हैं। ऑक्सफोर्ड और AstraZeneca Plc. की वैक्सीन ChAdOx1 nCov-19 क्लिनिकल ट्रायल के अंतिम चरण में है। इस चरण में पहुंचने वाली दुनिया की यह पहली वैक्सीन है। वहीं, अमेरिका की Moderna Inc अपनी वैक्सीन mRNA-1273 के ट्रायल का दूसरा चरण शुरू कर चुकी है। Moderna Inc भी काफी तेजी से काम कर रही है, लेकिन फिलहाल AstraZeneca का वैश्विक असर ज्यादा संभव लग रहा है। इसके लेकर स्वामिनाथन ने कहा, 'हमें पता है कि Moderna की वैक्सीन भी तीसरे फेज के क्लिनिकल ट्रायल में पहुंचने वाली है, शायद जुलाई में, इसलिए वे भी ज्यादा पीछे नहीं हैं, लेकिन AstraZeneca का ग्लोबल स्कोप ज्यादा है।

कांग्रेस नेता मिलिंद देवड़ा ने चीन के मामले में अपनी ही पार्टी को घेरा

चीन मामले में कांग्रेस नेता मिलिंद देवड़ा ने अपनी ही पार्टी को घेरा है. उन्होंने ट्विटर पर लिखा कि एकजुट होने के वक्त हो रही राजनीतिक कीचड़बाजी से हम दुनिया में तमाशा बन गए हैं. देवड़ा ने कहा कि चीन के खिलाफ एकजुट होने की जरूरत है. देवड़ा ने कहा, "यह बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है कि जब चीन के अतिक्रमण के खिलाफ राष्ट्रीय आवाज एक होनी चाहिए, तब उसकी जगह राजनीतिक कीचड़बाजी हो रही है. हम दुनिया में तमाशा बन गए हैं. चीन के खिलाफ एकजुट होने की जरूरत है."

इंसान के आकार के दिखे चमगादड़, लोग में भी व्याप्त

इस समय पूरी दुनिया में कोरोना का कहर जारी है. चीन से निकला यह वायरस लाखों लोगों की जान ले चुका है. इस वायरस के बारे में शुरू से ही यह चर्चा बनी है कि क्या यह चमगादड़ से निकला है या कहीं और से. इसी बीच फिलीपींस में इतने बड़े आकार का चमगादड़ दिखा कि लोग डर गए. दरअसल, फिलीपींस में यह चमगादड़ दिखा है. किसी घर के सामने उल्टा लटका यह विशालकाय चमगादड़ लोगों को डरा रहा है. यह तकरीबन छह फीट का दिखाई दिया है. सोशल मीडिया पर इसकी तस्वीरें वायरल हो रही हैं. @AlexJoestar622 नमक ट्विटर यूजर ने इस चमगादड़ की तस्वीर को पोस्ट करते हुए लिखा है कि फिलीपींस में इतनी ही साइज के चमगादड़ पाए जाते हैं. इस पोस्ट पर प्रतिक्रिया देते हुए तमाम ट्विटर यूजर ने इसे डरावना करार दे दिया. इसे देखकर लोग डरकर सहम गए. कुछ ने यह भी कहा कि ऐसे कई चमगादड़ यहां पाए जाते हैं.

दुनियाभर में कोरोना का आकंड़ा 1 करोड़ के पार, लगभग 5 लाख की मौत

दुनियाभर के 200 से ज्यादा देशों में कोरोनावायरस (Coronavirus) अपना कहर बरपा रहा है. इस बीच दुनिया में कोरोना संक्रमितों का आंकड़ा 1 करोड़ पार कर गया है, वहीं अब तक करीब 5 लाख लोगों की इससे जान जा चुकी है. न्यूज एजेंसी AFP के अनुसार अमेरिका में सर्वाधिक 25 लाख से ज्यादा लोग कोरोनावायरस से संक्रमित पाए गए हैं. आधिकारिक सूत्रों के अनुसार, दुनियाभर में 498,779 मौत सहित कम से कम 10,003,942 संक्रमण के मामले दर्ज किए गए हैं. यूरोप में सबसे ज्यादा 1 लाख 95 हजार लोगों की इस खतरनाक वायरस से जान जा चुकी है, वहीं यहां संक्रमितों की संख्या 26 लाख से ज्यादा है. वहीं, अमेरिका में लाख 25 हजार से ज्यादा लोगों की मौत हो चुकी है और संक्रमितों का आंकड़ा 25 लाख से ज्यादा है.

फेसबुक ने दी नफरत फैलाने वाले भाषण और विभाजनकारी विमर्श करने वालों की चेतावनी

फेसबुक (Facebook) ने अपने नियमों में बदलाव करते हुए अब भ्रामक पोस्ट पर चेतावनी लगाने का फरमान जारी किया है. फेसबुक ने एक बयान में कहा कि वह राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के पोस्ट सहित सभी नेताओं के 'समाचार की श्रेणी' में आने वाले उन सभी पोस्ट पर चेतावनी संकेत लगाएगा जो उसके नियमों के विपरीत होंगे.दरअसल फेसबुक पर नफरत फैलाने वाले भाषण और विभाजनकारी विमर्श का आरोप लगाते हुए बेन एंड जेरी तथा डोव जैसे ब्रांड देने वाली यूरोपीय कंपनी यूनिलीवर ने इस साल के अंत तक फेसबुक पर विज्ञापनों का बहिष्कार करने की घोषणा की थी. जिससे फेसबुक के शेयर आठ फीसदी से अधिक गिर गए. इस कंपनी के बाद कोका कोला ने भी कम से कम 30 दिन तक फेसबुक के बहिष्कार की घोषणा की थी. फेसबुक के सीईओ मार्क जुकरबर्ग ने ट्रंप के कुछ विवादित पोस्ट के खिलाफ कार्रवाई करने से यह कहते हुए इनकार कर दिया था कि लोगों को नेताओं के जस के तस बयान सुनने का अधिकार है. इसके विपरीत ट्विटर ने इन बयानों पर चेतावनी संकेत लगाए थे।

वाराणसी में भी एक पैन नंबर पर कार्यरत मिलें 6 शिक्षक

वाराणसी में भी एक ही पैन नंबर पर नौकरी करते छह शिक्षक मिले हैं। इनका पैन नंबर ही नहीं, जन्मतिथि और बैंक खाता नंबर भी अन्य जिलों में समान पाए गए हैं। शिक्षकों को रविवार को बीएसए कार्यालय में बुलाकर पूछताछ की गई। उनसे नौकरी संबंधी अभिलेख तलब किए गए हैं।

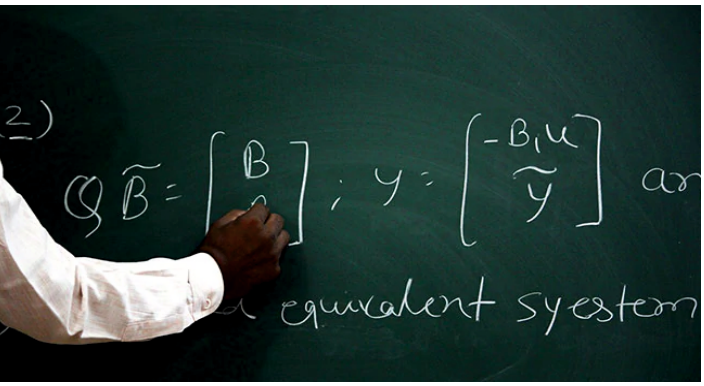

इस प्रकरण की जांच के लिए गठित तीन सदस्यीय समिति के सामने छह में चार शिक्षकों ने कहा कि वे उन जिलों में कभी गए ही नहीं जहां उनके पैन समान पाए गए हैं। दो शिक्षकों ने संबंधित जिलों में रहने की बात स्वीकार की है। बीएसए कार्यालय सोमवार को शासन को रिपोर्ट भेजेगा। पूरे प्रदेश में एक ही पैन पर नौकरी कर रहे 192 शिक्षकों की जांच चल रही है। बीएसए राकेश सिंह ने बताया कि काशी विद्यापीठ ब्लॉक के प्राथमिक विद्यालय पिलखिनी में तैनात प्रवीण कुमार यादव और अमेठी पढ़े रहे एक शिक्षक का पैन और जन्म तिथि समान है। प्रवीण यादव ने बताया कि वह कभी अमेठी गए ही नहीं। चोलापुर ब्लाक के प्राथमिक विद्यालय मुरेरी में पढ़ाने वाले महात्मा यादव और बलिया के शिक्षक का पैन और जन्मतिथि समान है?

बिहार के चर्चित सृजन घोटाले में तत्कालीन डीएम केपी रमैया समेत 60 के खिलाफ चार्जशीट दाखिल

2008 से 2014 तक भागलपुर से शुरू हुए अरबों के इस घोटाले में CBI ने एक के बाद एक तीन मामलों में चार्जशीट फाइल की है। पहले मामले में 28 आरोपी हैं जिनमें भागलपुर के तत्काली डीएम के पी रमैया, उप समाहर्ता विजय कुमार, नाजिर अमरेंद्र यादव, सृजन संस्था की प्रबंधक सचिव सरिता झा, अध्यक्ष शुभ लक्ष्मी प्रसाद, बैंक ऑफ बड़ौदा के मुख्य प्रबंधक शंकर प्रसाद दास, संयुक्त प्रबंधक वरुण कुमार, शाखा प्रबंधक गोलक बिहारी पांडा, शाखा प्रबंधक आनंद चंद्र गदाई के अलावा सृजन की पूर्व सचिव स्वर्गीय मनोरमा देवी के नाम शामिल हैं। सीबीआई ने इसी केस से जुड़े दूसरे मामले में 13 लोगों के खिलाफ चार्जशीट दाखिल की है। इनमें सृजन संस्था की प्रबंधक सरिता झा, अध्यक्ष शुभ लक्ष्मी प्रसाद, इंडियन बैंक के शाखा प्रबंधक सुरजीत राहा, बैंक ऑफ बड़ौदा के शाखा प्रबंधक आनंद चंद्र गदाई शामिल है। इस चार्जशीट में भी सृजन की पूर्व सचिव मनोरमा देवी का नाम शामिल है। CBI ने तीसरे मामले में सप्लीमेंट्री चार्जशीट दाखिल की है। इस आरोप पत्र में 19 लोगों के नाम हैं जिनमें बैंककर्मी भी शामिल हैं। आरोपियों में इंडियन बैंक के मुख्य प्रबंधक देव शंकर मिश्रा, बैंक ऑफ बड़ौदा के शाखा प्रबंधक शंकर प्रसाद दास, सृजन की सचिव सरिता झा और रजनी प्रिया तथा अध्यक्ष शुभ लक्ष्मी देवी शामिल हैं। इसी मामले में CBI 7 आरोपियों के खिलाफ पहले ही चार्जशीट दाखिल कर चुकी है।

मृत्यु के बाद किराएदार के परिवार को मिलेगा संपत्ति पर अधिकार

उच्चतम न्यायालय ने एक अहम फैसले में कहा है कि किराएदार की मौत के बाद उसके परिवार को उसी किराएदारी के तहत संपत्ति में बने रहने का हक है. ये सबलेटिंग यानी उपकिराएदारी और किराएदार द्वारा उस संपत्ति को किसी तीसरे को किराए पर चढ़ा देना नहीं है. सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि मृतक किराएदार के परिजनों से सबलेटिंग की दलील पर मकान खाली नहीं करवाया जा सकता है.

बता दें कि सुप्रीम कोर्ट ने ये व्यवस्था देते हुए उत्तराखंड हाई कोर्ट के उस फैसले को रद्द कर दिया जिसमें हाई कोर्ट ने एक किराएदार के परिवार को उपकिराएदार मानकर यूपी शहरी भवन (किराएदारी, किराया और खाली करने के विनियमन) एक्ट, 1972 की धारा 16(1) (बी) के तहत मकान को खाली घोषित कर दिया था। सुप्रीम कोर्ट में जस्टिस नवीन सिन्हा और जस्टिस बी. आर. गवई की बेंच ने कहा कि इस मामले में किराया नियंत्रक के आदेश के खिलाफ हाई कोर्ट को अनुच्छेद 227 के तहत अपील नहीं सुननी चाहिए थी. इस अनुच्छेद के तहत हाई कोर्ट को अपीलीय कोर्ट का अधिकार प्राप्त नहीं है. सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि हाईकोर्ट ने देहरादून जिला जज के आदेश के खिलाफ अनुच्छेद 227 के तहत याचिका स्वीकार करके उस पर सुनवाई की थी जो कि गलत है।

भारत में तैयार होगा दुनिया का सबसे हाईटेक स्टेडियम, बारिश में भी क्रिकेट का ले सकेंगे लुत्फ़

भारत में होने वाले मैचों में अब तक बारिश खलल डालती आई है और देश में एक भी ऐसा स्टेडियम नहीं है, जिसमें छत हो और मैच जारी रहे, लेकिन अब यह समस्या जल्द खत्म हो जाएगी। ऐसा इसीलिए क्योंकि पंजाब क्रिकेट संघ द्वारा चंडीगढ़ में बनाया जा रहा दुनिया का पहला हाईटेक स्टेडियम जल्द बनकर तैयार होगा।

यहां तक कि मोटेरा में बने दुनिया के सबसे बड़े क्रिकेट स्टेडियम में भी ये सुविधा नहीं है, जिसमें बारिश में मैच का आयोजन किया जा सके। दरअसल, मुल्लांपुर अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम को ग्रीन बिल्डिंग कांसेप्ट के तहत तैयार किया गया है। 150 करोड़ रुपये की लागत से आठ लाख स्क्वायर फीट में बना यह स्टेडियम मोहाली के आइएस बिंद्रा स्टेडियम से तीन गुना बड़ा है। दुनिया के बाकी हाईटेक स्टेडियमों के मुकाबले ये थोड़ा अलग है और विषम परिस्थितियों में भी यहां मैच आयोजित किए जा सकते हैं।

बीजेपी सांसद प्रज्ञा ठाकुर ने चीन विवाद पर राहुल पर साधा निशाना

मध्य प्रदेश की भोपाल लोकसभा सीट से बीजेपी सांसद प्रज्ञा सिंह ठाकुर ने कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी का नाम लिये बिना कहा

कि ''एक विदेशी महिला से पैदा हुआ व्यक्ति राष्ट्रवादी नहीं हो सकता है.'' ठाकुर प्रदेश बीजेपी कार्यालय में एक कार्यक्रम के बाद भारत-चीन के बीच तनाव के संदर्भ में कांग्रेस के आरोपों पर बात कर रही थीं. एक सवाल पर पत्रकारों से उन्होंने कहा, ''कांग्रेस को तो अपने गिरेबान में झांककर देखना चाहिये. उनमें न तो बोलने की सभ्यता है, न ही पार्टी में संस्कार हैं, न ही उनकी पार्टी में देशभक्ति है. मैं एक बात कहूंगी कि देशभक्ति आयेगी कहां से, जब दो देशों की सदस्यता लेकर रहेंगे.'' उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह के नेतृत्व में देश सुरक्षित हाथों में है.

बीएचयू में 479 टीचिंग एवं ग्रुप ए के पदों के लिए ऑनलाइन करें आवेदन

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय यानि बीएचयू ने विभिन्न टीचिंग एवं नॉन-टीचिंग ग्रुप ए पदों के लिए रोलिंग नोटिफिकेशन हाल ही में 27 जून 2020 को प्रकाशित रोजगार समाचार में जारी किया है। बीएचयू ने नये भर्ती विज्ञापन में 479 टीचिंग एवं ग्रुप ए पदों के लिए आवेदन आमंत्रित किये हैं। इन पदों के लिए ऑनलाइन आवेदन किये जा सकते हैं और आवेदन के लिए वर्तमान कट-ऑफ अंतिम तिथि 31 जुलाई 2020 है। ऑनलाइन आवेदन के बाद उम्मीदवारों को डाउनलोड की गयी हार्ड कॉपी को निर्धारित संलग्नकों के साथ 3 अगस्त 2020 तक विश्वविद्यालय में जमा कराना होगा। बीएचयू द्वारा जारी भर्ती विज्ञापन (सं. 01/2020-21) के अनुसार विभिन्न विभागों में प्रोफेसर, एसोशिएट प्रोफेसर, असिस्टेंट प्रोफेसर और नॉन-टीचिंग ग्रुप ए पदों डायरेक्टर के पदों के लिए चयनित सिर्फ उन्हीं उन्ही उम्मीदवारों को निर्धारित पे-मैट्रिक्स लेवल पर नियुक्ति दी

हिज्बुल का टॉप कमांडर मसूद अनंतनाग में ढेर

जम्मू कश्मीर का डोडा जिला एक बार फिर आतंक मुक्त हो गया है. डोडा का रहने वाला हिज्बुल कमांडर मसूद (Masood) सोमवार सुबह अनंतनाग जिले में हुई मुठभेड़ में मारा गया. वह डोडा जिले में जीवित बचा आखिरी आतंकी था. उसके सफाये के साथ ही डोडा जिले में आतंकी खत्म हो गए हैं. मसूद के पास से कई हथियार बरामद किए गए. मारे गए आतंकियों में हिज्बुल कमांडर मसूद और लश्कर के 2 आतंकी शामिल थे. मसूद डोडा का ही रहने वाला था. सुरक्षाबलों को बड़ी कामयाबी मिली है. त्राल के बाद अब डोडा भी आतंक मुक्त हो गया है. जम्मू कश्मीर में इस साल जनवरी से लेकर अब तक मुठभेड़ में 116 आतंकी मारे जा चुके हैं.

नेपाल में इशारों में भारत पर साधा निशाना

नेपाल के प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली की कुर्सी पर खतरे के बादल लगातार बढ़ते जा रहे हैं। सत्तारूढ़ नेपाल कम्युनिस्ट पार्टी में मचे घमासान और देश में सरकार के खिलाफ जारी गुस्से से ध्यान भटकाने के लिए पीएम ओली अब उग्र राष्ट्रवाद का प्रयोग कर रहे हैं। उन्होंने अपनी पार्टी में मचे घमासान को लेकर भारत पर इशारों-इशारों में आरोप लगाते हुए कहा कि एक दूतावास मेरी सरकार के खिलाफ होटल में साजिश रच रहा है। देश में ओली के इस्तीफे की मांग काफी लंबे समय से उठ रही है। मदन भंडारी की 69 वीं जयंती के अवसर पर प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली ने कहा कि भले ही उन्हें पद से हटाने का खेल शुरू हो लेकिन यह असंभव है। प्रधानमंत्री ओली ने दावा किया था कि काठमांडू के एक होटल में उन्हें हटाने के लिए बैठकें की जा रही है और इसमें एक दूतावास भी सक्रिय है। बता दें कि ओली का इशारा भारत की तरफ है।

100 करोड़ की लागत से हाईटेक बनेगा सारनाथ

भगवान बुद्ध की उपदेश स्थली सारनाथ को स्मार्ट पर्यटन स्थल बनाया जाएगा। यूपी पर्यटन मंत्रालय ने वर्ल्ड बैंक सहायतित पर्यटन योजना को हरी झंडी दे दी है। इस योजना के तहत 100 करोड़ की लागत से इस बौद्ध सर्किट को हाईटेक बनाया जाएगा। सारनाथ में पर्यटन विकास के दौरान चौखंडी से सारनाथ रेलवे स्टेशन तक पाथ-वे का निर्माण होगा। सारनाथ रेलवे स्टेशन पर प्रवेश के मार्ग पर बुद्ध द्वार का निर्माण होगा जिससे स्टेशन आने वाले पर्यटकों को स्टेशन पर ही बुद्ध संग काशी की झलक दिखेगी । इसके अलावा सारनाथ में स्थित 26 मंदिरों के मार्ग को अंतर्राष्ट्रीय स्तर का बनाया जाएगा। इस पूरे बौद्ध क्षेत्र में तीन प्रवेश द्वार बनेंगे जिनमे से एक द्वार अभी तैयार भी है। सारनाथ म्यूजियम और उसके आप पास के इलाकों को भी स्मार्ट और हाईटेक बनाया जाएगा। सारनाथ का डियर पार्क सौंदर्यीकरण एवं विस्तार किए जाने के साथ ही बच्चों को झूलने के लिए झूला आदि भी लगाया जाएगा।

युवाओ के लिए बेरोजगारी...

वर्तमान में सरकार इस बात पर अधिक बल दे रही है कि देश के सभी युवक स्वावलंबी बनें और वे केवल सरकारी सेवाओं पर ही आश्रित न रह कर अपितु उपयुक्त तकनीकी अथवा व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण कर स्वरोजगार हेतु प्रयास करें।

नवयुवकों को उद्यम लगाने हेतु सरकार उन्हें कम ब्याज दरों पर ऋण प्रदान कर रही है तथा उन्हें उचित प्रशिक्षण देने में भी सहयोग कर रही है। बदलते परिपेक्ष्य में हमारे देश के नवयुवक कसौटी पर खरे उतरेंगे और देश में फैली बेरोजगारी जैसी समस्या से दूर करने में सफल होंगे।

मुश्किलों से दो दो हाथ...

पति के इलाज के लिए गहने तक बेचने पड़े मगर उन्होंने ने भी हार नहीं मानी और अपने पति की सेवा करती रहीं।

फिलहाल कुछ समाजसेवी संस्थाओं की मदद से जितेंद्र को सरकार की ओर से मोटराइज्ड ट्राई साईकिल मिली जिसके जरिये वो बाहर निकले और कारीगरों और अपने परिचितों के माध्यम से रोजगार को फिर से शुरू किया।

विज्ञापन हेतु!

विज्ञापन और अपने पते पर मैगज़ीन प्राप्त करने के लिए 09807505429, 08924881010 पर संपर्क करें!

आवश्यकता है!

FIVE PRODUCTIONS के अंतर्गत बनने वाली शॉर्ट फिल्म्स में अभिनय के लिए 09807505429, 08924881010 पर संपर्क करें!

आवश्यकता है!

न्यूज़ बकेट मार्केटिंग टीम का हिस्सा बनने के लिए 9807505429 पर संपर्क करे।

आप हमें अपना बायो-डाटा m@fivealphabets.com पर भी भेज सकते है।

GAMETE

GAMETE HEALTHCARE PVT LTD

AN ISO 9001:2015 & GMP CERTIFIED COMPANY

A wide range of :

Tablets | Capsules | Syrup | Injectables
Dry Syrups | Soft Gel | Capsules
Oral Liquids | Ointments Gel | Nasal Drops
Eye & Ear Drops | Suspensions | Beta-Cap etc

- **Excellent Packing and full Support of promotional inputs.**
- **Manufacturing pharmaceuticals products for multiple therapeutic fields.**
- **Company operates in compliance with WHO : GMP certification and customer satisfaction mean the most to us.**

For further details contact at :

Shop No. 3, Mira Gavthan Road, Distt. Thane, M.S.O. Mumbai

✆ 9415812557, 9415812001

खमरिया हास्पिटल

(ह्यूमन वेलफेयर ट्रस्ट द्वारा संचालित)

आलोक नगर, हास्पिटल रोड, खमरिया, भदोही

(एलोपैथिक, होमियोपैथिक एवं आयुर्वेदिक चिकित्सा सुविधायुक्त)

मोतियाबिन्द का ऑपरेशन करावें जीवन खुशहाल बनावें ।

विवेक मौर्य
मो.: 8874020504

रामधनी मौर्य
Mo. 9415625292

आँख का ऑपरेशन प्रतिदिन होता है

1. बिना टांके के मोतियाबिन्द का ऑपरेशन –

50 रूपये के पर्चे पर सभी जांच के बाद पामा, एस्फेरिक, स्क्वायरएज लेंस से मात्र 2500 रूपये में करावें। ऑपरेशन के बाद एक माह की दवा मुफ्त और 250 से 400 रूपये में चश्मे की सुविधा। मरीज एवं एक साथी को खाने एवे रहने की सुविधा मुफ्त।

2 आधुनिक फेको मशीन द्वारा मोतियाबिन्द का ऑपरेशन–

50 रूपये के पर्चे पर सभी जांच के बाद आधुनिक इनफीनिटी फेको मशीनों द्वारा फोल्डेबुल इण्डियन लेंस के साथ सभी खर्चे सहित। (1) हाइड्रोफिलिक लेंस से 5000 रूपये में (2) हाइड्रोफोबिक लेंस से 8500 रूपये में।

3. फोल्डेबुल विदेशी हाइड्रोफोबिक लेंस के साथ सभी खर्चे सहित (1) मात्र 11000 रूपये में लेंस (2) मात्र 14000 रूपये में सिंगल पीस लेंस से (3) मात्र 16000 रूपये में लेंस नेचुरल एलो से।

4. नान कान्ट्रेक्ट टोनोमीटर मशीन द्वारा आंख के प्रेशर (टेन्शन) की जांच फ्री में।

5. ऑटोरिफ्रेक्टो मीटर मशीन द्वारा चश्मा जांच फ्री में।

6. ए–स्कैन द्वारा लेंस के पावर की जांच मात्र 100 रूपये में।

7. याग लेजर द्वारा आंख की झिल्ली काटने की सुविधा मात्र 500 रूपये में।

8. लेंस स्टार मशीन से लेंस के पावर की जांच 500 रूपयें में । फेको आपरेशन मे फ्री।

9. ओ.सी.टी. मशीन की सुविधा 500 रूपये में उपलब्ध।

अन्य सुविधाएं-

1. नाक, कान एवं गला रोग ओ.पी.डी. एंव ऑपरेशन की सुविधा उपलब्ध। (दिन– गुरूवार व शनिवार)
2. जनरल– ओ.पी.डी. एवं आपरेशन की सुविधा उपलब्ध। (दिन–बुधवार, शुक्रवार)। लेप्रोस्कोपिक सर्जरी की सुविधा उपलब्ध
3. हड्डी रोग– ओ.पी.डी. एवं आपरेशन में सी–आर्म व डिजिटल एक्स–रे की सुविधा। (दिन–मंगलवार)
4. महिला रोग ओ.पी.डी. एवं आपरेशन की सुविधा उपलब्ध। (दिन– शनिवार)
5. दांत रोग के जांच एवं उपचार की सुविधा उपलब्ध।
6. होमियोपैथिक चिकित्सक (सोमवार से शनिवार)
7- आयुर्वेदिक चिकित्सक (मंगलवार, वृहस्पतिवार, शुक्रवार, शनिवार)

मोतियाबिन्द क्या है ?

प्राकृतिक लेंस का झाई युक्त (धुंधला) होना मोतियाबिन्द कहलाता है। यह उम्र बढ़ने के साथ ही एक सामान्य प्रक्रिया है। बच्चों में मोतियाबिन्द के अलग–अलग कारण होते हैं। कोई इलाज, दवा अथवा किसी प्रकार का खान–पान मोतियाबिन्द का बनना नहीं रोक सकता है। प्राकृतिक लेंस के स्थान पर कृत्रिम लेंस लगाना ही इसका कारगर समाधान है।

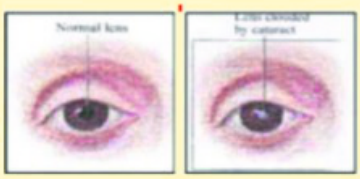

मोतियाबिन्द के लक्षण-

1. बिना दर्द के धुधला दिखना
2. तेज रोशनी में चमक व दृष्टि का कम होना
3. एक वस्तु को दो जगह देखना
4. रंगों की चमक कम होना
5. बार-बार चश्में का पावर बदलना
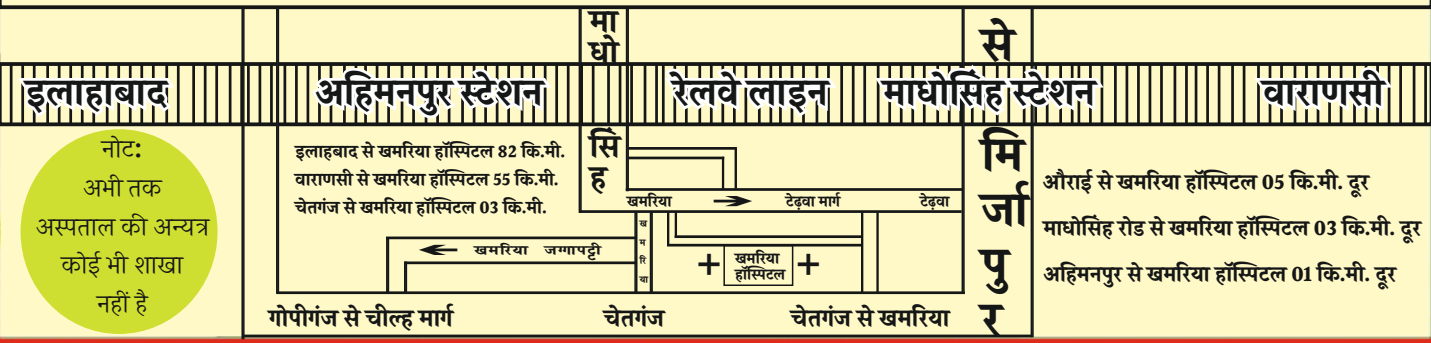
इलाहाबाद गोपीगंज ← माधोसिंह जी0टी0 रोड औराई → वाराणसी